हँसती दुनिया

वर्ष 46
अंक 3
मार्च 2019

₹15/-

हँसती दुनिया

• वर्ष 46 • अंक 3 • मार्च 2019 • पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : **सी. एल. गुलाटी**
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
7. अनमोल वचन
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कहानियां

8. फिर लौटा कौवा
: डॉ. दर्शन सिंह 'आश्ट'

18. वफादार वजीर
: दीपांशु जैन

25. शक दूर हुआ
: राजकुमार जैन 'राजन'

30. अब चोरी नहीं
: रामविनय राम

39. देश का बेटा
: शिवचरण चौहान

46. माँ की नसीहत
: डॉ. सेवा नन्दवाल

कविताएं

17. दो बाल गीत
: राजेन्द्र निशेश

23. निडर थे भगतसिंह
: हरजीत निषाद

24. दो बाल कविताएं
: मीरा सिंह 'मीरा'

33. जंगल की होली
: राजेन्द्र निशश

43. नाचो गाओ भैया रे
: राजकुमार जैन 'राजन'

43. होली में भीगे मोती
: डॉ. हरीश निगम

विशेष/लेख

6. कुदरत के हैरत भरे नजारे...
: अर्चना जैन

16. आंगन से लुप्त होती गौरैया
: किरण बाला

20. कृत्रिम रंग का सेहत पर प्रभाव
: डॉ. विनोद गुप्ता

28. हरड़ में अद्‌भुत गुण हैं
: विपिन कुमार

32. परीक्षा : कैसे हों सफल
: किशन लाल शर्मा

41. पौराणिक कहानियों में होली
: दिनेश दर्पण

सबसे पहले

परिश्रम का फल

हम सभी परिश्रम करते हैं, जब परीक्षा करीब होती है तब और भी अधिक परिश्रम करते हैं। इस परिश्रम करने के पीछे हमारा कुछ उद्देश्य होता है। कोई सिर्फ पास ही होना चाहता है, कोई कक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होना चाहता है और कोई-कोई तो पूरे विद्यालय में अधिक से अधिक अंकों से सर्वोत्तम स्थान पाना चाहता है। जो अधिक से अधिक अंक लेकर सर्वोत्तम स्थान पाना चाहता है, वह औरों से अधिक परिश्रम करता है; और जो केवल पास होकर आगे की कक्षा में जाना चाहते हैं, वे भी परिश्रम तो करते हैं परन्तु वे उतनी शक्ति नहीं लगाते जितनी उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए होती है। इस प्रकार जो जितना पाना चाहता है उतना ही वह कर्म करता है।

क्या पास होना, प्रथम-द्वितीय आना या सर्वोत्तम स्थान पाना ही सफलता या उद्देश्य का पूरक है। कुछ विद्यार्थी केवल माता-पिता खुश हो जाएं इसलिए मेहनत करते हैं, कुछ विद्यार्थी अपनी कक्षा में प्रथम आकर बाकी विद्यार्थियों की तुलना में अपने को श्रेष्ठ कहलवाने के लिए, अधिक परिश्रम करते हैं और कुछ विद्यार्थी तो सभी शिक्षकों, अभिभावकों, मित्रों और अन्य लोगों की नज़र में हीरो बनकर अपने को उत्तम दिखाना चाहते हैं।

इस प्रकार जो भी हो रहा है वह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए कम और दूसरों को दिखाने के लिए अधिक हो रहा है। यह मानसिकता हमें सभी वर्ग के लोगों में देखने को मिलती है। आज आवश्यकता है कि हम सभी जो भी कार्य करें वह हमारी स्वेच्छा के अनुरूप ही हो। हम लगन, निष्ठा, कर्तव्यपरायणता और कर्मठता से परिश्रम करें। इस तरह करने से हमें सहज ही सफलता भी मिलेगी और हमारे उद्देश्य की पूर्ति भी होगी। इस प्रकार हर कार्य खुशी से करते हुए जो प्रसन्नता हृदय में होगी वह हमें तो आनन्दित करेगी ही, वह आस-पास के वातावरण में भी खुशी ही बिखेरेगी। फिर लक्ष्य, सफलता, उद्देश्य स्वत: ही हमारे होंगे और हमें उनके पीछे भागना नहीं पड़ेगा।

प्यारे साथियों! पढ़ना, विद्या ग्रहण करना, जानकारी प्राप्त करना और ज्ञान-गुण सम्पन्न होना बहुत आवश्यक है क्योंकि इससे सूझ-समझ तो बढ़ती ही है साथ में बुद्धि का विकास भी होता है। अगर इस प्रकार का विकास किसी भी व्यक्ति या प्राणी को छोटा दिखाने के लिए किया जाता है या यश प्राप्ति के लिए किया जाता है तो वह केवल अपने अहंकार को ही तृप्त कर सकता है। परन्तु अन्तर्ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता। विद्या का घमण्ड करना विद्या का अपमान है और घमण्ड करने वाले हमेशा नीचे ही गिरते हैं, पहले दूसरों की नज़र में फिर अपनी नज़र में। हमें भी निरन्तर यह ध्यान रखना है कि हम जो भी कार्य करें चाहे वह घर में हो, स्कूल में हो, कार्यालय में हो, समाज में हो, व्यापार में हो उसको अपनी पूर्ण योग्यता, शक्ति, दृढ़निश्चयता, ईमानदारी, खुशी और मेहनत से करें। इस तरह से कोई भी कार्य निश्चय ही अपने आप में सफल होता है। फिर मेहनत किसी को बोझ नहीं लगेगी और इस तरह के कर्म करने के बाद जो भी परिणाम आएगा वह सफलता या असफलता नहीं होगी, वह हमारा हमारे ही हाथ से प्राप्त किया हुआ ईनाम, आत्म-सन्तुष्टि और प्रभु-प्रसाद होगा।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी !!!

पद संख्या : 185

गुरमुख दीयां नज़रां अन्दर सोना मिट्टी इक समान।
गुरमुख दे लई इक्को जहे ने धनहीन अते धनवान।
गुरमुख दे लई इक्को जहे ने हरख सोग ते मान अपमान।
गुरमुख दे लई इक्को जहे ने दुक्खां सुक्खां दे भुगतान।
गुरमुख दे लई इक्को जहे ने कुल दुनियां दे सब इनसान।
गुरमुख दे लई इक्को जहे ने राजा होवे जां दरबान।
अपणे गुर दे चरणां दा ही गुरमुख रखदै सदा ध्यान।
गुरमुख पल पल मुंहों आखे जो कुझ है तेरा भगवान।
गुरमुख दे जो दर्शन कर लए उसदा हुन्दा ए कल्यान।
अवतार एहो जहे गुरमुक्खां तों जिंद जान करे कुरबान।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि गुरु से ज्ञान प्राप्त करके गुरमुख भक्ति की श्रेष्ठ अवस्था प्राप्त करता है। ऐसे गुरमुख की दृष्टि को संसार का धन-वैभव आकर्षित नहीं कर पाता। उसकी दृष्टि में बहुमूल्य सोना और मूल्यहीन मिट्टी दोनों एक समान होते हैं। उसके लिए धनवान और धनहीन दोनों एक जैसे होते हैं। गुरमुख लोगों को अमीर-गरीब नहीं बल्कि मानव के स्तर पर देखता और व्यवहार करता है। गुरमुख को गुरु की कृपा से यह ज्ञात होता है कि जीवन में दुख और सुख, धूप और छांव, दिन और रात की भांति आते-जाते रहते हैं। ये जीवन में स्थाई रूप से नहीं रहते, इसलिए गुरमुख दुख-सुख दोनों को समभाव से स्वीकार करता है। उसके लिए हर्ष और शोक (दु:ख/व्याकुलता) में कोई अन्तर नहीं रहता। वह हर्ष में अत्यन्त उत्साहित और शोक में अत्यधिक निरुत्साहित नहीं होता। हर्ष-शोक अथवा मान-अपमान में वह समदृष्टि रखता है और एकरस रहता है।

गुरमुख को गुरुकृपा से ऐसी दृष्टि प्राप्त हो जाती है कि उसे सबमें एक प्रभु का ही नूर दिखाई देता है। हर घट में उसे परमेश्वर के ही दर्शन होते हैं इसलिए भले ही राजा हो या दरबान उसे संसार के सारे इन्सान एक समान लगते हैं। गुरमुख पल-पल अपने सद्गुरु के चरणों का ध्यान करता है। उसे पता होता है कि ज्ञान और प्रेम की धारा गुरु के चरणों से ही प्रवाहित होती है। वह पल-पल यही कहता है कि मेरे पास तन, मन, धन रूप में जो कुछ भी है। हे प्रभु! यह सब आपका ही है। मेरे पास आपका दिया हुआ सब कुछ आप की अमानत है। ऐसे गुरमुख की अवस्था अति उत्तम होती है। जो कोई भी उसके दर्शन कर लेता है, उसका कल्याण हो जाता है।

बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि उपरोक्त गुणों से युक्त गुरमुख पर मैं अपना प्राण-प्रण, अपना तन-मन कुरबान करता हूँ।

लेख (प्रकृति) : अर्चना जैन

कुदरत के हैरत भरे नजारे...

कुदरत के रहस्य भी बड़े निराले हैं, कहीं आग उगलते सदियों पुराने कुदरती कुण्ड हैं तो कहीं पर्वतों से झरते रहस्यमय झरने हैं, पर्वतों के गर्भ में पानी कहाँ से आकर स्फूटित होता है और कैसे मनमोहक झरनों में तब्दील हो जाता है? शायद यह राज तो कुदरत के पास ही है। और हाँ, कुछ ऐसी प्राकृतिक गुफाएं भी हैं, जिनमें जाकर कुछ दिन रहने से शरीर के कई रोग दूर हो जाते हैं, ऐसी जड़ी-बूटियां भी हैं जो लम्बे समय तक यौवन का रूप बनाए रखती हैं और ऐसी झीलें भी हैं, जिनका पानी रंग-बिरंगा है, खैर...।

आपको जानकर अचरज होगा। उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव संसार के ऐसे रहस्यमय और अजूबे स्थान हैं, जहाँ ग्रीष्म के मौसम में सूरज कभी नहीं ढलता। हाँ, इन स्थानों पर सदा दिन-सा रहता है। यहाँ कुदरत का अपना अनूठा जादू दिखाई देता है। धरती अपने अक्ष पर थोड़ी तिरछी टिकी है और सूर्य की परिक्रमा करती है। पृथ्वी द्वारा इस स्थिति में सूर्य के चारों ओर घूमने से एक दिलचस्प स्थिति उत्पन्न हो जाती है। मध्य गर्मी के महीनों में यहाँ सूरज की किरणें अधिक घातक हो जाती हैं और मध्य सर्दी के महीनों में यहाँ कभी सुबह नहीं होती है।

और, हाँ उत्तरी नार्वे में तो प्रतिवर्ष तीन माह तक सूर्य पूरे दिन और पूरी रात अपनी सम्पूर्ण आभा से चमकता है।

उत्तरी ध्रुव पर स्थित आर्कटिक क्षेत्र की बर्फ के नीचे कोई जमीन नहीं है, यह मात्र एक बर्फीला अंतरीप है, जो महासागर में तैरता रहता है।

दक्षिण ध्रुव में चारों ओर बहुत सारी जमीन है जिसे हम अंटार्कटिक के नाम से जानते हैं, दरअसल यह एक बहुत बड़े महाद्वीप से भी काफी बड़ा है।

कुदरत के ये हैरत भरे नजारे, सचमुच कुदरत के अनमोल उपहार से कम नहीं हैं।

बाबा हरदेव सिंह जी के अनमोल वचन

- ★ परमात्मा को रिझाना तभी सम्भव है, जब हम इन्सानों को भी अपनाएं।
- ★ सद्गुरु की रहमत के बिना परमात्मा से दूरी बनी रहती है।
- ★ जिसमें दास भावना है, धर्म के क्षेत्र में वही ऊँचा माना जा सकता है।
- ★ अभिमान जूते में कंकर की तरह होता है जो दु:ख ही देता है।
- ★ सहनशीलता कमजोरी नहीं बल्कि शक्ति का सूचक है।
- ★ भक्त एक खिले फूल की भांति होता है और भक्ति उसकी महक है।
- ★ होठों पर मुस्कान हर मुश्किल कार्य को आसान कर देती है।
- ★ इन्सानों से समाज बनता है। इन्सान सुधरेगा तो समाज सुधरेगा।
- ★ अज्ञानी सदा सोये रहते हैं और ज्ञानी सदा जागते रहते हैं।
- ★ चाहे तुम्हारा कोई भी साथ न दे तो अकेले ही सत्य के मार्ग पर बढ़ते चलो।
- ★ हम, महापुरुषों का नाम लेते हैं। उनकी पूजा करते हैं। हम उनको मानने तक सीमित न रहकर उनकी (बात) भी मानें।
- ★ जो व्यक्ति सन्तुष्ट है, चाहे उसके पास चाहे थोड़ा-सा ही धन हो, फिर भी स्वयं को धनाढ्य समझता है।

कहानी : डॉ दर्शन सिंह आश्ट

फिर लौटा कौवा

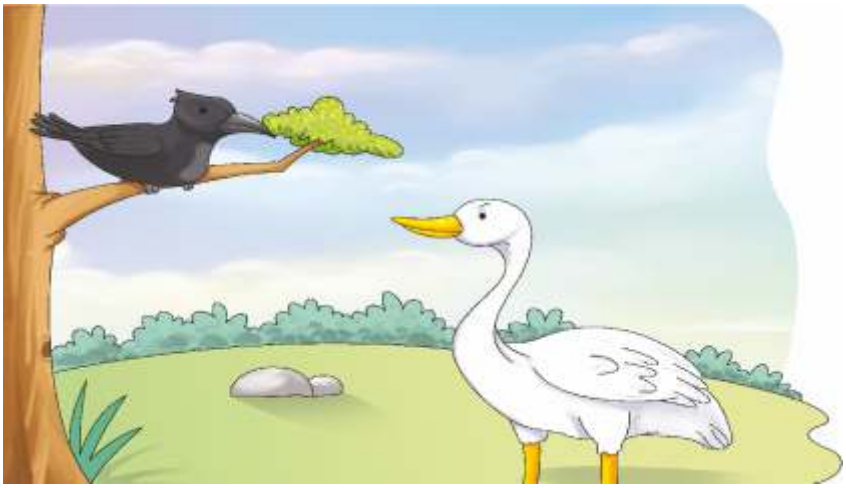

बबूल के वृक्ष पर एक कौवा और एक बगुला रहते थे। जब कभी कौवा बगुले को देखता तो दु:खी हो उठता। मन ही मन प्रभु से प्रार्थना करता– हे प्रभु, आप मुझे भी बगुले जैसा सफेद बना दें। तब मैं कितना सुन्दर लगूंगा।

समय गुजरता गया। कौवे की बगुले जैसा सफेद रंग का पक्षी बनने की धुन और भी ज्यादा बढ़ती गई। एक दिन कौवा बगुले से बोला– मैं भी तुम्हारे जैसा सफेद बनना चाहता हूँ, मुझे सफेद होने का रहस्य तो बता दो।

बगुला हँसता हुआ बोला– कौवे भाई, कुदरत ने हमें जैसा भी रंग-रूप दिया है। उसी से सन्तुष्ट होकर जीवन व्यतीत करना चाहिए।

–मैं समझ गया। तुम नहीं चाहते कि कोई और पक्षी तुम्हारी तरह सफेद रंग का हो। तुम सफेद होने का रहस्य नहीं बताना चाहते तो न सही लेकिन एक बात कान खोलकर सुन लो। एक दिन

मैं तुम्हें अवश्य सफेद कौवा बनकर दिखाऊंगा। फिर करना मेरा मुकाबला।– कहकर कौवा उड़ गया।

उड़ता-उड़ता वह एक ऐसे स्थान पर पहुँच गया, जहाँ बहुत से कौवे बैठकर कुछ खा रहे थे। जब कौवा उनके ऊपर से गुजरने लगा तो एक बूढ़े कौवे ने उसे आवाज दी– आ जा भाई तू भी। यहाँ खाने के लिए बहुत कुछ पड़ा है।

–तुम ही खाओ। तुम्हारा और मेरा क्या मेल? अब मैं तुम्हारे जैसा काला-कलूटा नहीं रहूँगा। हंस या बगुले की भांति सफेद कौवा बनकर दिखाऊंगा।– कौवा कड़वी आवाज में बोला।

–सफेद कौवा बनने चले हो? अरे वाह! तब तो हमें भी सफेद बनने का रहस्य बताना भाई। – हँसता हुआ बूढ़ा कौवा बोला। अन्य कौवे भी हँसने लगे।

लेकिन उस कौवे ने उनकी एक न सुनी। उड़ता-उड़ता वह एक घने जंगल में चला गया। जंगल में निर्मल पानी की एक बड़ी झील में हंस को तैरता देखकर कौवा प्रसन्न हो गया।

–हंस भाई, मैं भी तुम्हारे जैसा सफेद रंग वाला बनना चाहता हूँ। काले रंग से मुझे नफरत है। मुझे सफेद बनने की कोई तरकीब बता दें तो... – कौवे ने गिड़गिड़ाते हुए हंस से कहा।

–सफेद रंग का बनना चाहते हो?– कहकर हंस मुस्कुराया। कुदरत ने हमें जैसा रंग-रूप दिया है, उसी से ही सन्तुष्ट होकर जीना चाहिए।

–ठीक है, ठीक है; न बताओ। तुम नहीं चाहते कि कोई पक्षी तुम्हारे जैसा सुन्दर और सफेद दिखाई दे लेकिन मैंने भी ठान ली है कि सफेद कौवा जरूर बनकर रहूँगा। कहकर कौवा झील में डुबकियां लगाने लगा। उसका ख्याल था कि शायद झील में ही रहने के कारण हंस का रंग सफेद है। वह बड़ी देर तक डुबकियां लगाता रहा, लेकिन उसके रंग में कोई फर्क नहीं आया। निराश होकर कौवा वहाँ से उड़कर गाँव की तरफ आ गया।

एक जगह पर उसने देखा कि शाम को कुछ बच्चे किसी नाटक की तैयारी कर रहे थे। वह पास के एक वृक्ष पर जा बैठा। उन्हें ध्यान से देखता रहा।

काले रंग के एक लड़के ने छोटी-सी थैली से पाउडर निकालकर हाथों पर मला, फिर चेहरे पर लगाया। उसका चेहरा सफेद दिखने लगा। कौवे ने मन ही मन चुटकी बजाई और आँख बचाकर पाउडर की थैली चोंच में उठाकर ले उड़ा। एक जगह जाकर उसने थैली से सारा पाउडर निकालकर अपने सारे शरीर पर लगाया लेकिन जब वह उड़ने लगा तो सारा पाउडर उतर गया। कौवा फिर काले रंग का दिखने लगा।

कौवा भी कहाँ हार मानने वाला था। वहाँ से उड़ता-उड़ता वह एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ एक बड़े मकान में सफेदी हो रही थी। सफेदी करने

वाले लोग मकान के बाहर रखे एक बड़े ड्रम में से सफेद रंग का चूना बाल्टी में डालकर ले जाते और दीवारों पर कूची फेरने लगते। कूची फेरने से दीवारें एकदम सफेद होती जा रही थीं। यह देखकर कौवा खुश हुआ और मौके की तलाश करने लगा। एक आदमी चूने के घोल की बाल्टी भरकर अन्दर गया। कौवे ने 'आव देखा न ताव' झटपट उड़कर चूने के घोल वाले ड्रम में डुबकी लगा दी। कुछ ही क्षणों में उसकी आँखों में जलन होने लगी। धीरे-धीरे सारा शरीर जलने लगा। जान बचाने के लिए वह एक तालाब में जाकर लगातार डुबकियां लगाता रहा। तब कहीं उसकी आँखों और शरीर के अन्य हिस्सों से सफेदी की जलन का असर कम हुआ।

काफी देर बाद जब कौवा पूरी तरह होश में आया, तो उसने अपना माथा पीट लिया और रंग सफेद करना भूल अपने घर की ओर उड़ गया।

सभी साथी उसे वापिस लौटता देख बहुत हँसे परन्तु अब उसे पूरी तरह समझ आ गया था कि जो प्रभु ने दिया उसमें संतोष करना चाहिए।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

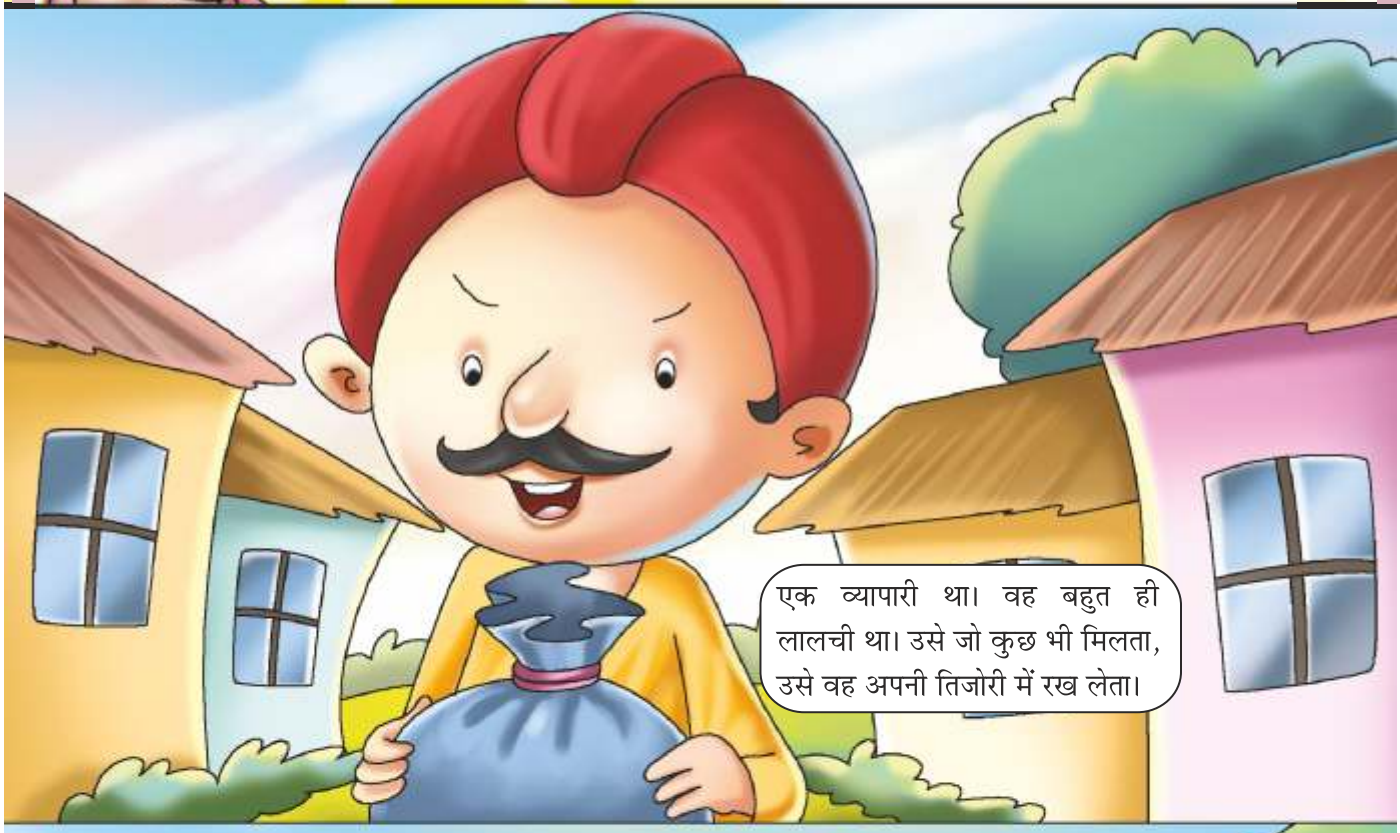

वह थैली अचानक ही मुखिया की बेटी को मिल गई।
वह गाँव के मुखिया के घर गया और उसे थैली खोने के बारे में बताया। मुखिया ईमानदार व दयालु था।
मुखिया ने थैली खोलकर सिक्के गिने तो उसमें तीस सिक्के थे।
मुखिया ने वह थैली व्यापारी को सौंप दी। व्यापारी ने थैली खोली और सिक्के गिनने लगा।

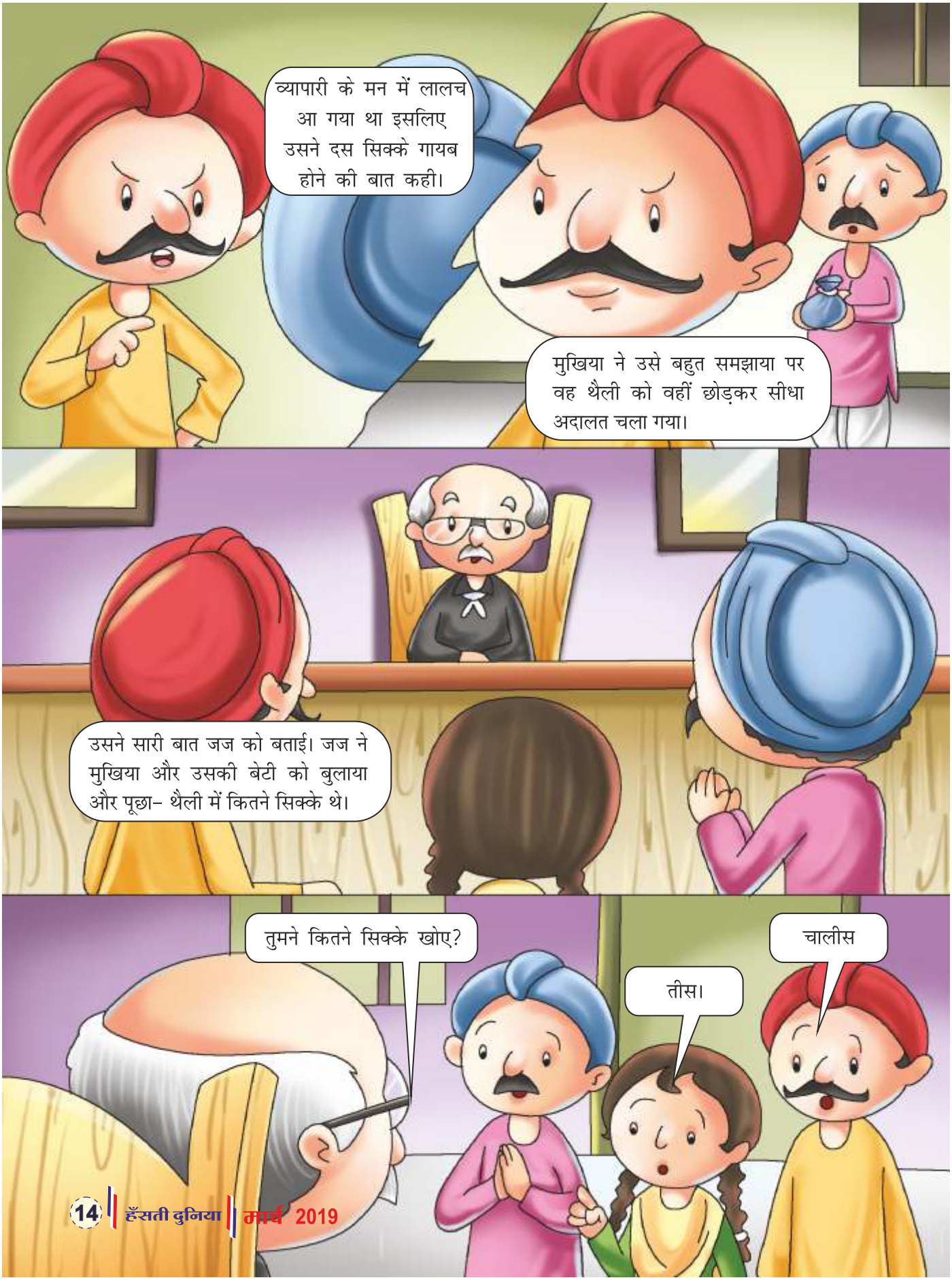
व्यापारी के मन में लालच आ गया था इसलिए उसने दस सिक्के गायब होने की बात कही।
मुखिया ने उसे बहुत समझाया पर वह थैली को वहीं छोड़कर सीधा अदालत चला गया।
उसने सारी बात जज को बताई। जज ने मुखिया और उसकी बेटी को बुलाया और पूछा– थैली में कितने सिक्के थे।
तुमने कितने सिक्के खोए?
तीस।
चालीस

तो इसका मतलब यह है कि यह थैली तुम्हारी नहीं है। ये थैली इसी लड़की के पास रहेगी जब तक इसका असली मालिक न मिल जाए।
और अगर कोई चालीस सिक्कों की थैली आएगी तो मैं तम्हें बुलवा लूँगा।
अब व्यापारी को अपने झूठ पर पछतावा होने लगा और वह चिल्ला उठा– नहीं, नहीं मेरे तो तीस सिक्के ही खोए थे।
पर जज ने उसकी एक न सुनी और अदालत से बाहर निकाल दिया।
इस तरह 'लालच का अंत बुरा ही होता है।'

आलेख : किरण बाला

आंगन से लुप्त होती गौरेया

चिड़ियों का फुदकना, चहचहाना भला किसे अच्छा नहीं लगता? तिनका-तिनका इकट्ठा कर उनका घोंसला बनाना फिर अंडे देना और भाग-दौड़कर बच्चों के लिए मुलायम खाने की व्यवस्था करना, निश्चित ही उनकी सूझबूझ का परिणाम है। अंडों से जब नवजात बाहर निकलते हैं और चिड़ा-चिड़ी उनके लिए दाना-पानी लाते हैं तो बच्चों का मुंह खोलकर उचकना देखते ही बनता है। लेकिन आज हमारे घर-आंगन में गौरेया जैसी चिड़िया के दर्शन दुर्लभ हैं। ये लुप्त होने के कगार पर हैं।

गौरेया एक चिरपरिचित चिड़िया है जो आपके और हमारे घरों में फुदकती रहती है। यद्यपि यह पालतू पक्षी नहीं है, फिर भी वह हमारे घरों में घोंसला बनाती है तथा उसमें अंडे देती है। हमारे घर में किसी सुरक्षित जगह पर ये घोंसला बनाती है। नर और मादा दोनों इसे एक-एक तिनका जुटाकर तैयार करते हैं। यदि आप इसके घोंसले को तोड़ दें या हटा दें तब भी ये हिम्मत नहीं हारती और दोबारा उसी स्थान पर घोंसला बनाती है। घोंसला इतना बड़ा होता है कि उसमें पांच-छह अंडे दिए जा सकें।

अंडों से जब शिशु बच्चे बाहर निकलते हैं तो वे उड़ नहीं सकते यानी अपना भोजन स्वयं जुटा नहीं सकते। ऐसे में उनके माता-पिता अपनी चोंच में उनके लिए भोजन लाते हैं तथा मुंह में खिलाते हैं। चूंकि बच्चों को भूख ज्यादा लगती है और संख्या में भी वे पांच-छह तक हो सकते हैं इसलिए माता-पिता का सारा दिन उनके लिए भोजन जुटाने में ही लग जाता है। कई बार वे स्वयं भूखे रह जाते हैं लेकिन बच्चों को खिलाते हैं।

जब बच्चे सयाने हो जाते हैं तो नर और मादा मिलकर उन्हें उड़ना सिखाते हैं।

यद्यपि गौरेया एक डरपोक चिड़िया है लेकिन ढीठ भी खूब है। रोटी बनाते समय ये आटे को चोंच में भरकर फुर्र से उड़ जाती है। वैसे ये घोंसला बनाने के स्थान को लेकर भी ये आपस में झगड़ती हैं।

गौरेया पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं और वह अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है। ऊँची-ऊँची बहुमंजिली इमारतों ने इनके प्राकृतिक ठिकानों को नष्ट कर दिया तो रही-सही कसर मोबाइल टॉवर्स ने पूरी कर दी। इन टॉवरों से निकलती रेडिएशन किरणें गौरेया की जान की दुश्मन बनी हुई हैं। इंटरनेशनल यूनियन फॉर केजर्वेशन ऑफ नेचर की रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया में विलुप्त होती 7291 प्रजातियों में गौरेया भी है। भारत में भी इसे लुप्तप्राय पक्षियों की सूची में रखा गया है। हर वर्ष 20 मार्च को गौरेया दिवस मनाया जाता है ताकि लोगों का ध्यान उसके संरक्षण पर जा सके। उधर वर्ल्ड लाइफ इंटरनेशनल द्वारा जारी सूची में भी गौरेया को उन पक्षियों की सूची में रखा गया है जिनकी संख्या तेजी से घट रही है।

गौरेया ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में बहुतायत किसी समय से पाई जाती थी लेकिन आज इन दोनों जगह ही इनकी संख्या सिमट कर रह गई है। विगत दशक में इनकी संख्या में 60 प्रतिशत गिरावट देखी गई है जो कि चिंता की बात है।

दो बाल गीत : राजेन्द्र निशेश

होली का हुड़दंग

होली का हुड़दंग मचा है,
रंगीले दिन हैं आये।

नीले, पीले रंग गुलाबी,
पिचकारी भर-भर लाये।

ढोल-मजीरा खूब बज रहा,
सब पंचम सुर में गाये।

मस्ती का आलम है ऐसा,
चेहरे लो खिलखिलाये।

नन्द गाँव की बात निराली,
सब ही कान्हा बन आये।

जंगल में होली

जंगल में फिर मस्ती छाई,
होली आई, होली आई।

ढोल-मजीरा खूब बजाया,
भालू जी ने नाच दिखाया।
हल्ला-गुल्ला शोर मचाया,
गधेराज ने गान सुनाया।

लोमड़ जी ने भांग चढ़ाई,
होली आई, होली आई।

बन्दर मामा खेल दिखाते,
रंग भरी पिचकारी लाते।
शेर सिंह मुस्काते जाते,
सबको मिलकर गले लगाते।

भेद-भाव की मिटी लड़ाई,
होली आई, होली आई।

नीकू खरहा सज कर आया,
संग अपने सियार को लाया।
सभी ने मिल गुलाल उड़ाया,
मौसी ने पकवान बनाया।

चूहों ने भी मौज उड़ाई,
होली आई, होली आई।

बाल कहानी : दीपांशु जैन

वफादार वजीर

प्राचीन काल की बात है। तब ईरान के बादशाह हरीतिमुल्लाह थे। उनके दरबार में बहुत ही सज्जन एक वजीर था। बादशाह उसके ऊपर बहुत भरोसा करते थे। वह भी तन-मन से बादशाह की सेवा में जुटा रहता था। यही नहीं, वह सदैव जनता की भलाई के काम भी करता रहता था। दूसरों की सहायता करना उसे अच्छा लगता था।

वजीर कहा करता– बुरे आदमी को प्रसन्न रखने का सबसे अच्छा उपाय है, यदि पीठ पीछे वह तुम्हारी निन्दा करता है तो तुम उसके सामने उसकी प्रशंसा करो।

एक दिन किसी कारणवश बादशाह वजीर से नाराज हो गया। बादशाह ने वजीर को कारागार में डाल दिया। वजीर के परोपकारी कार्यों से दरबार के सभी व्यक्ति खुश रहते थे। कारागार के कर्मचारी भी वजीर को किसी भी प्रकार की तकलीफ न होने देते थे। सभी चाहते थे कि किसी तरह दयालु वजीर कारागार से बाहर आए, मगर बादशाह को मनाना 'टेढ़ी खीर' थी। दरबारी जानते थे बादशाह से वजीर के लिए दया की भीख मांगना, अपने को मुसीबत में फंसाना है। इसीलिए वे चुप रहते थे, किन्तु थे मन में दुखी।

कारागार में ही एक दिन वजीर को अत्यन्त गुप्त रीति से पड़ोसी बादशाह का पत्र मिला। पत्र में लिखा था– अत्यन्त खेद की बात है, बादशाह ने आप जैसे गुणी व्यक्ति का सही सम्मान करना तो दूर आपको कष्ट भरा जीवन बिताने के लिए विवश कर दिया है। यदि आप मेरे राज्य में रहना स्वीकार कर लें तो मैं आपको कारागार से निकालकर सुख और सम्मानपूर्वक रखूंगा। आप जैसे गुणी व्यक्तियों के लिए कारागार में जीवन व्यतीत करना अच्छा नहीं है। कारागार से यहाँ तक आने की पूरी व्यवस्था भी मैं कर दूंगा। आपको किसी प्रकार की चिन्ता करने की जरूरत नहीं। मैं आपके उत्तर की प्रतीक्षा करूंगा।

वजीर ने ध्यानपूर्वक उस पत्र को पढ़ा। फिर कुछ सोचकर उसी पत्र के पीछे अपना उत्तर लिख दिया। इसी बीच बादशाह के एक जासूस ने बात ताड़ ली। उसने तुरन्त बादशाह को सूचना दी।– आपका वजीर कारागार में रहकर भी पड़ोसी बादशाह से पत्र-व्यवहार कर रहा है।

सुनते ही बादशाह क्रोध से कांपने लगे। उन्होंने तुरन्त सिपाहियों को आदेश दिया। पत्र के साथ पत्रवाहक को पकड़कर मेरे सामने हाजिर किया जाए तथा वजीर को भी मेरे सामने लाया जाए। मैं उसका सिर कलम करवा दूंगा।

आदेश सुनते ही सिपाही दौड़े। कुछ ही क्षणों में पत्र के साथ पत्रवाहक को पकड़कर ले आए। बादशाह के सामने हाजिर कर दिया।

वजीर भी आया। बादशाह ने वजीर से पूछा– तुम्हें पड़ोसी बादशाह का पत्र मिला?

–जी हुजूर!– वजीर ने कह दिया।

–तब तुमने उत्तर भी लिखा ही होगा। तुमने मेरे विरुद्ध षडयंत्र किया। जानते हो इसकी सजा?– बादशाह क्रोध से भुनभुनाए।

–पत्र आपके हाथों में है। पढ़कर देख लें।– वजीर ने शालीनता से कहा।

बादशाह पत्र पढ़ने लगे। पत्र की पीठ पर वजीर ने अपने उत्तर में दूसरे बादशाह को लिखा था– आपने मेरी जितनी प्रशंसा की है, मैं उसके योग्य बिल्कुल नहीं हूँ। आपके आदेश का मैं किसी प्रकार भी पालन नहीं कर सकता। इस शाही परिवार ने मेरा पालन किया है। बादशाह का मैंने नमक खाया है। यदि बादशाह ने किसी बात से नाराज होकर मुझे कारागार में भेज दिया तो क्या इसी कारण मैं उनके उपकारों को भूल जाऊँ? हमेशा भलाई करने वाले की एकाध बुराई तो देखनी ही नहीं चाहिए।

पत्र पढ़कर बादशाह की आँखों से आंसू गिरने लगे। उसने वजीर को बंधनमुक्त करते हुए कहा– मुझे क्षमा करना। दूसरों के कहने में आकर मैंने एक विद्वान और निर्दोष व्यक्ति को कारागार में भेजकर बड़ी भूल की।

वजीर फिर से सम्मानपूर्वक अपना काम करने लगा।

होली पर विशेष : डॉ. विनोद गुप्ता

कृत्रिम रंग का सेहत पर प्रभाव

प्राकृतिक रंग और गुलाल सेहत लिए निरापद होते हैं, जबकि कृत्रिम रंग गुलाल आदि सेहत के लिए नुकसानदेह होते हैं। विडम्बना यह है कि इन्हीं का इस्तेमाल ज्यादा होता है क्योंकि ये सस्ते होते हैं और आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। किसी समय असली गुलाल लगाकर होली खेली जाती थी जो कि पेड़ से बनती थी लेकिन आज इसका स्थान कृत्रिम या संश्लेषित गुलाल ने ले लिया है और यह लाल, हरे, पीले, नीले, केसरिया आदि रंगों में उपलब्ध है।

कुछ विक्रेता गुलाल में अभ्रक मिलाते हैं जिससे वह चमकीली दिखाई देती है। यह भी सेहत को नुकसान पहुँचाती है। घटिया गुलाल में चूना, रेत या राख आदि मिलाकर उसे रंग दिया जाता है। ये सभी चीजें त्वचा को क्षति पहुँचाती हैं। यदि सामने वाला इसे शरीर पर रगड़कर लगा दे तो त्वचा छिल भी सकती है। गुलाल में यदि पोटेशियम डाईमेगनाइट मिला हो तो वह अधिक हानिकारक होता है। वैसे भी गुलाल इसलिए निरापद नहीं है क्योंकि यह पसीने में घुल कर शरीर में प्रवेश कर जाता है।

होली खेलने के दौरान जब हाथ मुंह सभी रंगों में रंगे होते हैं। ऐसे में कोई भी चीज आप खाते या पीते हैं तो रंगों का कुछ अंश मुंह के जरिए शरीर में पहुँच जाता है जो किसी घातक विष से कम नहीं। अधिकांश लोगों को कृत्रिम या रासायानिक रंगों से एलर्जी होती है। कुछ को गंभीर किस्म की एलर्जी हो जाती है जिसका उपचार बड़ा मुश्किल है वैसे भी शरीर पर छोटे–छोटे दाने या फुंसियां उभरना, त्वचा में जलन होना, घाव, खुजली, फफोले होना तो आम बात है ही। यदि शरीर पर कहीं चोट या घाव है तो उस पर लगे रंग निश्चित तौर पर हानि पहुँचाते हैं।

यदि मुंह पर रंग लगाया जाता है तो वह मुंह के जरिए शरीर में पहुँच सकता है। यदि उसमें लेड या आर्सेनिक मिला हो तो वह पेट में पहुँचकर गड़बड़ी पैदा कर सकते हैं। 'आरामाइन ओ' तथा 'रोडामाइन बी' जैसे रंग तो कैंसर का कारण भी बन सकते हैं। त्वचा पर खुजली या फफोले होने के लिए 'जिंक क्लोराइड' जिम्मेदार हो सकता है जो रंगों में मिला होता है। वैसे तो रंग चाहे गीले हो या सूखे, त्वचा को नुकसान पहुँचाते ही हैं पर गीले रंगों का प्रभाव ज्यादा होता है। नकली, घटिया अथवा मिलावटी रंग सेहत के दुश्मन होते हैं फिर चाहे वे गीले हो या सूखे। होली पर रंग गुलाल ही नहीं वार्निश, पेंट, तारकोल तथा ग्रीस आदि भी लोग एक दूसरे के चेहरे पर लगा देते हैं। जाहिर है ये सब त्वचा के अनुकूल नहीं है और इन्हें छुड़ाने में पसीना आ जाता है।

रासायनिक रंगों की बजाय हर्बल रंगों से होली खेलना निरापद रहता है। केसरिया रंग बनाने के लिए पानी में चंदन पाउडर तथा टेसू के फूलों का इस्तेमाल किया जा सकता है। गुलाबी रंग बनाने के लिए चुकन्दर को रातभर पानी में भिगोकर उससे तैयार किया जा सकता है। लाल रंग बनाने के लिए लाल चंदन पाउडर गुडहल के फूल आदि का इस्तेमाल किया जा सकता है। मेहंदी पाउडर को पानी में भिगोकर हरा रंग बना सकते हैं जबकि पीला रंग तैयार करने के लिए आटे में हल्दी पाउडर मिलाया जा सकता है। चाहे तो गेंदे के फूलों को उबाल कर भी पीला रंग तैयार कर सकते हैं। इसी प्रकार नारंगी रंग बनाने के लिए पलाश के फूलों को रात भर पानी में भिगो दे। सुबह रंग तैयार। यदि आप भूरा रंग चाहते है तो कत्थे को पानी में घोल सकते हैं। काला रंग बनाने के लिए रात को लोहे की कढ़ाई में थोड़ा आंवला चूर्ण मिला दे। सुबह काला रंग तैयार मिलेगा।

प्रेरक-प्रसंग : विभा वर्मा

तीन बातें

उन्नीसवीं शताब्दी की बात है। बंगाल के मेदिनीपुर जिले के वीर सिंह नामक गाँव में एक बालक अपनी माँ के साथ रहता था। एक दिन बालक ने माँ से कहा– माँ मेरी इच्छा है कि मैं तुम्हारे लिए कुछ गहने बनवाऊँ।

यह सुनकर माँ बोली– हाँ बेटा, बहुत दिनों से मुझे तीन गहनों की चाह है।

–कौन से तीन गहने?– बालक ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

–बेटा! एक, इस गाँव में स्कूल नहीं है इसलिए एक अच्छे स्कूल की स्थापना।

दो, दवा के लिए दवाखाना और

तीन, गरीब व अनाथ बच्चों के लिए कुछ खाद्य-सामग्री का वितरण। बस यही मेरे तीन गहने हैं।– माँ ने कहा।

माँ की बात सुनकर बालक की आँखों से प्रेमाश्रु बहने लगे। उसने माँ के लिए तीन गहने बनवा दिए। बंगाल में आज भी 'भगवती विद्यालय' इसका साक्षी है। ऐसी माँ थी भगवती और उनका पुत्र का नाम पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर था।

प्रेरक-प्रसंग : मन्दीप कुमार

मितव्ययता

खलीफा हजरत अली राजकीय कागज़ात देख रहे थे कि कुछ लोग किसी निजी कार्य के सम्बन्ध में उनसे मिलने आये।

हजरत अली जिस दीपक की रोशनी में कागज़ देख रहे थे, उसे उन्होंने तुरन्त बुझा दिया और एक दूसरा दीपक जलाकर उन लोगों से बात करने लगे। यह देख उन लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

जब लोगों की बातचीत पूरी हुई तो हजरत अली ने दूसरा दीपक बुझाकर पहला दीपक जलाया और फिर कागज़ात देखने लगे।

अब तो वे लोग अपना कौतूहल रोक न सके। उन्होंने उन दोनों दीपकों को जलाने का प्रयोजन पूछा।

हजरत अली ने उत्तर दिया– जिस समय आप आये थे। मैं उस समय सरकारी तेल की रोशनी में सरकारी काम कर रहा था। आप ही सोचिये, निजी बातों में सरकारी तेल कैसे जलाया जा सकता है? आपके आने पर मेरा निजी काम हुआ उसके लिए मैंने घर का दीपक जलाया था।

विद्वान और मूर्ख

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने एक बार कालेज में भाषण दिया। वहाँ एक विद्यार्थी ने उनसे पूछा– आप विद्वान हैं या मूर्ख?

स्वामी जी कुछ क्षण रूके फिर बोले– मैं कुछ बातों में विद्वान और कुछ बातों में मूर्ख हूँ। अर्थात् संस्कृत भाषा में विद्वान हूँ, डॉक्टरी और खेतीबाड़ी आदि विषयों में मूर्ख।

स्वामी जी का उत्तर सुनकर वह विद्यार्थी बहुत प्रभावित हुआ और बिल्कुल शान्त हो गया। सत्य सदा बहुत असर छोड़ता है।

प्रस्तुति : ऊषा सभरवाल

पुण्यतिथि (23 मार्च) पर विशेष

बाल कविता : हरजीत निषाद

निडर थे भगत सिंह

हँसते हँसते शूली पर चढ़ने वाले।
नज़र नहीं आते अब वैसे मतवाले।
स्वतंत्रता संग्राम के सच्चे सेनानी,
भगत सिंह थे फौलादी सीने वाले।

फिरंगियों से ऐसा जम कर युद्ध हुआ।
राजगुरु सुखदेव का सच्चा संग हुआ।
संसद में बम फेंक डरे न भागे वो,
देख वीरता उनकी दुश्मन दंग हुआ।

खुला किया विद्रोह ब्रिटिश साम्राज्य हिला।
आजादी की घुट्टी सबको दिया पिला।
युवकों के आदर्श निडर थे भगत सिंह,
सांडर्स को मारा गोरों को सबक मिला।

देश है अब आजाद स्वतंत्रता दिवस मनाएं।
वीर शहीदों को पर न कभी भुलाएं।
कायम रखना आजादी को हर कीमत पर,
प्रण कर लें जीवन भर ऐसा हम कर पायें।

दो बाल कविताएं :
मीरा सिंह 'मीरा'

समय से

सुबह होने से पहले,
बिस्तर जो छोड़ देते हैं।
उन बच्चों के कदमों में,
दुनिया के सुख होते हैं।।

सूरज उगने से पहले,
जो बच्चे उठ जाते हैं।
रहते सदा निरोग तन से,
कक्षा में अव्वल आते हैं।।

जीवन के हर दौड़ में,
सबसे आगे नजर आते हैं।
सुख समृद्धि ऐश्वर्य,
उनके दास बन जाते हैं।।

समय से जो सोते हैं,
और समय से जागते हैं।
वो अपनी तकदीर खुद,
स्वर्णाक्षरों से लिखते हैं।।

माँ
सुन रही हो न

माँ, मेरी बात सुन रही हो न
माँ मुझे तुम गुन रही हो न...

नहीं चाहिए गुड्डे गुड़िया,
नहीं चाहिए कंगन चुड़ियां।
बड़ी हो गयी तुम्हारी मुनिया,
माँ मेरी बात सुन रही हो न...

विद्यालय पढ़ने जाऊँगी,
पढ़ लिखकर ज्ञान पाऊँगी।
मुझे कमतर नहीं समझे दुनिया,
माँ मेरी बात सुन रही हो न...

मेरे कन्धे पर हाथ धर दो,
रगों में उल्लास भर दो।
तेरा नाम करेगी रोशन मुनिया,
माँ तुम मुझे सुन रही हो न...

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

शक दूर हुआ

मीकू भेड़िया जैसे ही घर के निकट आया तो उसने घर के बाहर जानवरों की भीड़ देख वह शंकित हो उठा। पूरे दिन की थकान भूलकर वह तेज कदमों से घर की ओर बढ़ा। उसका मन अज्ञात आशंका से भर गया था।

मीकू को आते हुए देखकर टोमी कुत्ता बोला– लो, मीकू चाचा भी आ गये। जो कुछ कहना है उन्हीं से कहो।

मीकू भेड़िये ने पास आते हुए पूछा– क्या बात है टोमी भाई! सब जानवर यहाँ कैसे इकट्ठे हुए हैं?

जवान बच्चे हैं न! जरा सी बात पर उबाल आ जाता है। आगे-पीछे तो कुछ सोचते नहीं। दो घंटे से समझा रहा हूँ, समझते ही नहीं। टोमी कुत्ते ने परेशान होकर कहा– खेल-खेल में बच्चे आपस में लड़ पड़े। तुम्हारे बेटे बंटी भेड़िया के हाथ से चिंकू कुत्ते के लग गई। बस, बच्चे आपस में झगड़ पड़े। यह तो मुझे इसका पता लग गया और मैं तुरन्त यहाँ चला आया, नहीं तो उन्मादी बच्चे कोई अप्रिय काम कर चुके होते।– टोमी कुत्ता इतना कहते हुए मीकू भेड़िये के साथ जानवरों के बीच आ गया।

मीकू भेड़िये को इस जंगल बस्ती में रहते हुए कई वर्ष हो गये थे। वह जंगल विद्यालय के बच्चों को पढ़ाता था। पक्का मकान था उसका। सभी वहाँ प्रेम से रहते व खेलते थे।

टोमी कुत्ते ने सब बच्चों को समझाने के बाद डांटते हुए कहा– सब अपने-अपने घर लौट जाओ।– थोड़ी देर के गुस्से के बाद सभी लौट गये थे। मीकू भेड़िये ने सबके चले जाने के बाद अपने

बेटे बंटी भेड़िये को खूब डांटा। उसको इस घटना से बहुत दु:ख हुआ था। ऐसी घटना तो उसके जीवन में कभी नहीं घटी थी। जंगल बस्ती में सभी से अच्छा व्यवहार था। बच्चों की लड़ाई के कारण वह पुराना व्यवहार तोड़ना उचित नहीं समझता था।

फिर कुछ दिन बाद सब कुछ सामान्य हो गया। बच्चे मन का मैल भूलकर वापस एक हो गये थे। आपसी भाईचारा और प्रेम का वातावरण पूरी जंगल बस्ती में छाया हुआ था। भेदभाव जैसी कोई बात नहीं थी।

फिर भी जंगल में होने वाले दंगों, आगजनी और लूटपाट से मीकू भेड़िये के मन में शंका उभर आई थी। हालांकि किसी ने उसको कुछ नहीं कहा था। फिर भी उसे भय लगने लगा था। इस जंगल बस्ती में केवल एक ही तो भेड़िया परिवार था। आखिर एक दिन उसने जंगल बस्ती को छोड़ देने का विचार कर लिया। सोचा जहाँ ज्यादा से ज्यादा भेड़िया परिवार होंगे वहीं जाकर बस जाऊँगा।

उसकी इस भावना को कथित जंगल के नेताओं के भड़कीले भाषणों, अफवाहों और 'जंगल-दूरदर्शन' चैनलों पर प्रसारित घटनाओं से भी बल मिला। भेड़िया समुदाय व कुत्ता समुदाय को एक-दूसरे के खिलाफ भड़काया जाने लगा था।

एक दिन मीकू भेड़िये ने एक ट्रक मंगवाकर जरूरी सामान उसमें भर लिया और अपने परिवार के साथ रात में ही जंगल बस्ती छोड़ देने का फैसला कर लिया।

किन्तु उनके बस्ती छोड़ने से पहले ही इसकी भनक जंगल के अन्य जानवरों को लग गई थी। बात सारी जंगल बस्ती में फैल गई। देखते ही देखते टोमी

कुत्ता अपने साथियों के साथ मीकू भेड़िया के घर पर पहुँच गया। बंटी बंदर, चिंकू हिरन, जम्पी जिराफ, जम्बो हाथी, ब्राउनी भालू, लाली मोरनी, भूरी बकरी आदि जानवर भी वहाँ आ पहुँचे।

मीकू भेड़िये का परिवार किसी अनहोनी की आशंका से कांप उठा। तभी जानवरों की भीड़ में से टोमी कुत्ता आगे आकर बोला– यह क्या कर रहे हो मीकू चाचा। इस तरह कहाँ और क्यों भाग रहे हो? अरे भाई पीढ़ियों के मेल-मिलाप को यूं तोड़कर क्यों जा रहे हो? क्या तुमसे किसी जानवर ने कुछ कहा है? क्या तुम्हारी भावनाओं को किसी ने ठेस पहुँचाई है? जो तुमने यह कदम उठाया...।

–टोमी भाई! ऐसा कुछ भी नहीं हुआ है। किन्तु जंगल के हालात देखते हुए हमने यह बस्ती छोड़ देना ही उचित समझा है। हमारा अकेला परिवार है...– मीकू भेड़िये ने सहमते हुए कहा।

–इसका मतलब तो यह हुआ कि हम जानवरों पर तुम्हारा विश्वास ही नहीं रहा। यह आदमी की बनाई स्वार्थी दुनिया नहीं है जो छोटे-छोटे स्वार्थो की खातिर दंगा-फसाद पर उतर आती है। राष्ट्रीय सम्पत्ति का नुकसान करती है। मीकू चाचा, क्या तुमने हमें गैर समझा है। अरे भाई दूसरे जंगलों के माहौल से हमें क्या लेना। हम तो इस जंगल बस्ती में पले-बढ़े हैं और भाई-भाई की तरह रह रहे हैं। आगे भी मिलजुल कर ही रहेंगे। तुमने ऐसे कैसे सोच लिया कि हम सब गैर हैं? हमारे होते हुए तुम पर आंच नहीं आएगी चाचा! पहले हमारा खून गिरेगा उसके बाद ही कोई तुम्हारे परिवार की ओर आंख उठाकर देख सकेगा।– टोमी कुत्ते ने कहा तो सब जानवरों ने उसकी बात का समर्थन किया।

–हम तुम्हें नहीं जाने देंगे, मीकू चाचा!– टोमी कुत्ते ने दृढ़ता से कहा।

–हाँ, मीकू चाचा! हम नहीं जाने देंगे। तुम्हारे जाने से तो जंगल बस्ती को एक धब्बा लग जाएगा।– एक साथ कई जानवरों ने कहा।

मीकू भेड़िये का गला भर आया। उसकी व उसके परिवार की आंखें खुशी से छलछला आई। उसके मन की शंका जंगल बस्ती के जानवरों के असीम प्यार में धुल गई।

–मुझे माफ कर दो भैया! अब हम कहीं नहीं जाएंगे। कभी भी नहीं।– मीकू भेड़िये ने कहा। सभी जानवरों के चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे। उन्होंने मीकू भेड़िया को जंगल बस्ती छोड़ने से रोक लिया था।

आलेख (सेहत) : विपिन कुमार

हरीतकी (हरड़) में अद्भुत गुण हैं

बिहार में एक कहावत प्रचलित है– 'बनिया बहुत खुश हुआ तो उपहार में अपने ग्राहक को एक हरड़ दिया।' कीमत की दृष्टि से बनिया द्वारा दिया गया यह उपहार भले ही सामान्य एवं सस्ता हो किन्तु उपयोगिता की दृष्टि से यह असाधारण है। आयुर्वेदाचार्यों ने इसे 'अमृतोपम औषधि' कहा है। राजवल्लभ निघण्टु (पौराणिक ग्रन्थ) में तो इसे माता-पिता के समान हितकारी बताया गया है, जो कभी अपकार नहीं कर सकता।

हरड़ का वानस्पतिक नाम है– 'टर्मिनालिया चेब्यूला।' यह लघु हिमालय में रावी तट से लेकर असम तक (लगभग पांच हजार फीट की ऊँचाई वाले पर्वतीय भागों में) बहुतायत से पाई जाती है। इसके वृक्ष 50-80 फीट तक ऊँचे होते हैं। यह एक फल है। कच्चा फल हरा तथा पकने पर धूमिल पीला दिखता है।

हरड़ दो प्रकार की होती है– बड़ी एवं छोटी। बड़ी हरड़ में गुठली होती है जबकि छोटी हरड़ में गुठली नहीं रहती है। बीज होने के पहले जो हरड़ पेड़ से गिर जाती है, वही छोटी हरड़ कहलाती है। आयुर्वेदाचार्यों के अनुसार छोटी हरड़ ज्यादा गुणकारी होती है। वनस्पतिशास्त्रियों के मतानुसार हरड़ की तीन किस्में होती हैं– पके फल या बड़ी हरड़, अधपके फल या पीली हरड़ एवं अपक्व फल या छोटी हरड़।

हरड़ रंग में भूरी, काली तथा पीली होती है। भावप्रकाश निघण्टु में जल में डूब जाने वाली हरड़ को उत्तम माना गया है।

चरक संहिता में हरड़ को त्रिदोषनाशक, अनुलोमक, संग्रहणी, शूल, अतिसार (डायरिया), बवासीर तथा गुल्मनाशक, पाचक तथा भूख प्रदीपक बताया गया है। भावप्रकाश निघण्टु में इसे बवासीर

तथा सभी प्रकार के उदर रोगों में लाभकारी बताया गया है।

आधुनिक शोधों तथा वैज्ञानिक प्रयोगों में भी इसे अतिउपयोगी एवं निरापद पाया गया है। शोधकर्ताओं के अनुसार पेट एवं आंत की तमाम बीमारियों के लिए यह अतीव उपयोगी है। उनके अनुसार इसका मुख्य रेचक पदार्थ एन्थ्राक्विनोन अपना प्रभाव, सेवन के मात्र छः घंटे बाद ही दिखाने लगता है। पुरानी कब्ज की तो यह श्रेष्ठतम औषधि है। डॉ. एप्री जैसे पाश्चात्य चिकित्सा विज्ञानी ने इसे पेट की हर प्रकार की बीमारी में लाभप्रद बताया है। यह कफ, पित, वात तीनों का शमन करती है। स्नायु-विकारों को दूर करती है।

एक बार में हरड़ का तीन ग्राम चूर्ण लिया जा सकता है। आवश्यकतानुसार इसे प्रतिदिन दो या तीन बार लिया जा सकता है। ऋतु के अनुसार इसके अनुपान में भिन्नता हो सकती है। ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार के शोधकर्ताओं ने इस बारे में कुछ नियम बताए हैं–

★ कब्ज में हरड़ का चूर्ण बनाकर या घी में सेंकी हुई हरड़ डेढ़ से तीन ग्राम मात्रा में शहद अथवा सेंधा नमक के साथ लेना चाहिए।

★ अतिसार में हरड़ को उबालकर या भूनकर उसका सेवन करना चाहिए।

★ बवासीर में अथवा खूनी पेचिश में हरड़ का चूर्ण व गुड़ को गौमूत्र में मिलाकर रातभर रखकर प्रातः पीने से लाभ होता है। इसे दही या मट्ठे (छाछ) के साथ भी लिया जा सकता है।

★ किसी स्थान की सूजन तथा वेदना के शमन हेतु इसे जल में पीसकर लेप करने से फायदा होता है।

★ पीलिया तथा पेट की कृमि के शमन के लिए तीन से छः ग्राम हरड़ चूर्ण प्रातः-सायं ठंडे जल के साथ लेने से दो सप्ताह में ही आराम मिल जाता है।

★ अग्निमंदता में इसे चबाया भी जा सकता है।

आयुर्वेदाचार्यों के अनुसार हरड़ सेंधा नमक के साथ कफज, शक्कर के साथ पितज तथा घी के साथ वातज रोगों में लाभ पहुँचाती है।

हरड़ श्वांस रोग, अजीर्णता, ज्वर, अवसादग्रस्तता, लम्बे उपवास में, पिताधिक्य में तथा गर्भिणी के लिए वर्जित है। इन स्थितियों को छोड़कर हरड़ को कभी भी खाया जा सकता है। प्रतिदिन एक हरड़ प्रातः चबाने वाला व्यक्ति शीघ्र बुढ़ापा को प्राप्त नहीं करता है।

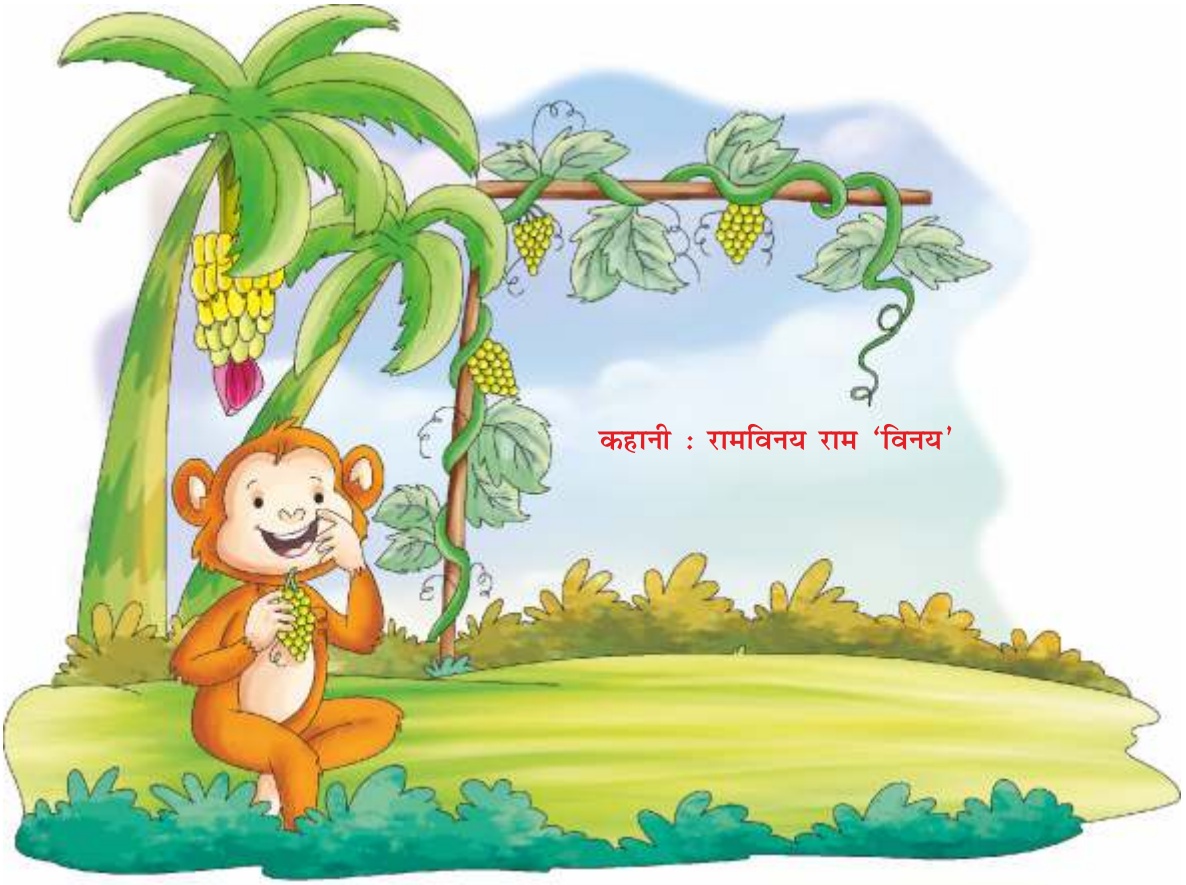

कहानी : रामविनय राम 'विनय'

अब चोरी नहीं

मंगलवन में एक बन्दर रहता था। नाम था चिम्पू। चिम्पू बहुत ही नटखट व शरारती था। इन दिनों उसे चोरी करने की बड़ी बुरी आदत पड़ गयी थी। चिम्पू का मित्र था भालू। जिसे सभी जानवर कल्लू कहते थे। वह चिम्पू को बहुत चाहता था।

जंगल की सीमा से सटा हुआ बाबूराव का बगीचा था। उस बगीचे में आम, केले व अंगूर के पौधे लगे थे। वैसे तो उस बगीचे की देख-रेख हेतु बाबूराव ने दो आदमियों को लगा रखा था। पर उनके न होने पर चिम्पू चुपके से बगीचे में चला आता और मजे से कभी अंगूर खाता तो कभी आम तो कभी केले। फिर ढेर सारे फल तोड़कर अपने साथ ले जाता और जाकर अपने प्यारे मित्र कल्लू को भी खाने को देता।

लगातार कई दिनों तक चिम्पू के हाथों तरह-तरह के फल खाने के बाद कल्लू को शक हुआ। उसने पूछा– चिम्पू तुम ऐसे स्वादिष्ट मीठे फल कहाँ से लाते हो यार..., अपने जंगल में तो ऐसे फलों के इक्के-दुक्के ही वृक्ष हैं।

–यार, तुम आम खाओ न! गुठली क्यों गिनते हो? –चिम्पू लापरवाही से कहता।

पर कल्लू को चिन्ता हुई। आखिर मेरा मित्र यह सब लाता कहाँ से है। कहीं वह किसी मुसीबत में न फंस जाए।

इधर बाबूराव के बागवानों को पता लग चुका था कि उनकी गैरहाजिरी में एक शरारती व चोर बन्दर बगीचे में आता है।

उन्होंने उस बन्दर को फंसाने की एक तरकीब खोज निकाली।

बागवानों ने टोकरी भर केले तोड़कर बगीचे में एक पेड़ के नीचे रख दिया और उस पेड़ की डाली पर जाल रख दिया। फिर उस जाल से निकली एक पतली रस्सी को टोकरी में रखे केलों की डंठल से बांध दिया।

चिम्पू अपने समय पर आया और मैदान साफ देखकर उछलते-कूदते हुए वह बगीचे में घुसा।

तभी उसकी नजर पेड़ के नीचे रखे टोकरी भर केलों पर पड़ी। पके हुए केलों को देखकर उसके मुंह से लार टपकने लगी। वह लालच में नीचे उतरकर टोकरी के पास पहुँचा और ज्योंही उसने केलों को उठाना चाहा तो जाल और केलों में बंधी रस्सी खिंच गई। पूरा जाल लहराकर चिम्पू के ऊपर आ गिरा।

अगले ही पल चिम्पू जाल में फंस गया। वह उसमें से मुक्त होने के लिए हाथ-पैर मारने लगा। चिम्पू बहुत घबराया, रोने लगा कि अब क्या होगा?

दोपहर को जब बगीचे के बागवान लौटे तो उस चोर बन्दर को जाल में फंसा देखकर खुश हुए। वे जाल में फंसे तड़पते चिम्पू के पास आकर बोले– बहुत चुरा-चुरा के फल खा लिए बन्दर। अब मदारी के पास चलकर ता थैइया करना।

–चलो भाई, इसे जाल समेत उठा के ले चलते हैं।– कहकर ज्योंही वे दोनों उसे उठाने को झुके, तभी उन्हें भालू की गर्जना सुनाई पड़ी। वह गुस्से से आँखें लाल किए हुए उन्हीं की ओर बढ़ा चला आ रहा था। दोनों बागवान यह देखकर चिम्पू को वहीं छोड़ घबराकर भागे।

वह भालू तो चिम्पू का मित्र कल्लू था। अतः वह उसके पास आया और उसने चिम्पू को जाल से आजाद किया। जाल से मुक्त होते ही चिम्पू अपने मित्र के गले जा लगा और कृतज्ञ भाव से बोला– मित्र, आज तुमने आकर मुझे बचा लिया वरना वे मुझे मदारी के पास पहुँचा देते। मित्र तुम कभी मेरा साथ न छोड़ना।

–एक शर्त पर– कल्लू फिर बोला– तुम मुझे वचन दो कि कभी तुम इस तरह से लालच व चोरी नहीं करोगे। लालची व चोर एक न एक दिन मुसीबत में जरूर फंसते हैं।

–मुझे माफ कर दो दोस्त, मैं वायदा करता हूँ कि आज के बाद मैं अपने जंगल के बाहर नहीं निकलूंगा। जंगल में ही जो रूखा-सूखा मिलेगा उसी को खाकर सन्तुष्ट रहूँगा पर लालच व चोरी कभी नहीं करूंगा।

आलेख : किशन लाल शर्मा

परीक्षा : कैसे हों सफल

परीक्षा से डरना नहीं चाहिए, न ही इससे घबराना चाहिए।

परीक्षा छोटी हो या बड़ी मतलब चाहे स्कूल की हो या कॉलेज की सबके लिए जरूरी है नियमित पढ़ाई। जो भी आपको स्कूल/कॉलेज में पढ़ाया जाए उसको घर पर एक बार जरूर पढ़ें। केवल स्कूल/कॉलेज की पढ़ाई पर्याप्त नहीं है। घर पर पढ़ना जरूरी है। जिस तरह आप निश्चित समय पर स्कूल/कॉलेज जाते हैं, ऐसे ही घर पर पढ़ने का समय भी निश्चित होना चाहिए।

ध्यान रहे रटने से काम नहीं चलता। आपने प्रश्नों के उत्तर रट लिए हैं और अगर कुछ भी भूल गये तो आप परीक्षा में लिख नहीं पायेंगे। रटने से बेहतर है समझना। समझ आने पर वो चीज आपके दिमाग में बैठ जायेगी और आप भूलेंगे नहीं। कोई चीज याद करने का बेहतर तरीका है परस्पर वाद-विवाद यानि ग्रुप डिस्कशन। अगर तीन-चार लोग मिलकर किसी विषय पर आपस में वार्ता कर ले तो वह विषय समझ भी आ जायेगा और दिमाग में अच्छी तरह बैठ भी जायेगा।

परीक्षा देते समय सबसे पहले प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़कर समझ लें। जो प्रश्न आपको अच्छी तरह आते हों पहले उन्हीं को करें। बाद में दूसरे प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्नों का उत्तर देते समय ध्यान रखें जो पूछा जाये उसी के बारे में लिखें। कोई भी प्रश्न छोड़े नहीं। इन बातों पर ध्यान देगें तो आप निश्चित सफल होंगे।

बाल-कविता : राजेन्द्र निशेश

जंगल की होली

बाहर आओ सब हमजोली,
आओ मिलकर खेलें होली।

खरहा जी पिचकारी लाओ,
भालू जी तुम नाच दिखाओ।
ढोल मजीरा खूब बजाओ,
गधेराज जी गान सुनाओ।

मीठी सब तुम बोलो बोली,
आओ मिलकर खेलें होली।
मौसी तुम पकवान बनाओ,
सबको मिलकर गले लगाओ।

सब के लगे आज रंगोली,
आओ मिलकर खेलें होली।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

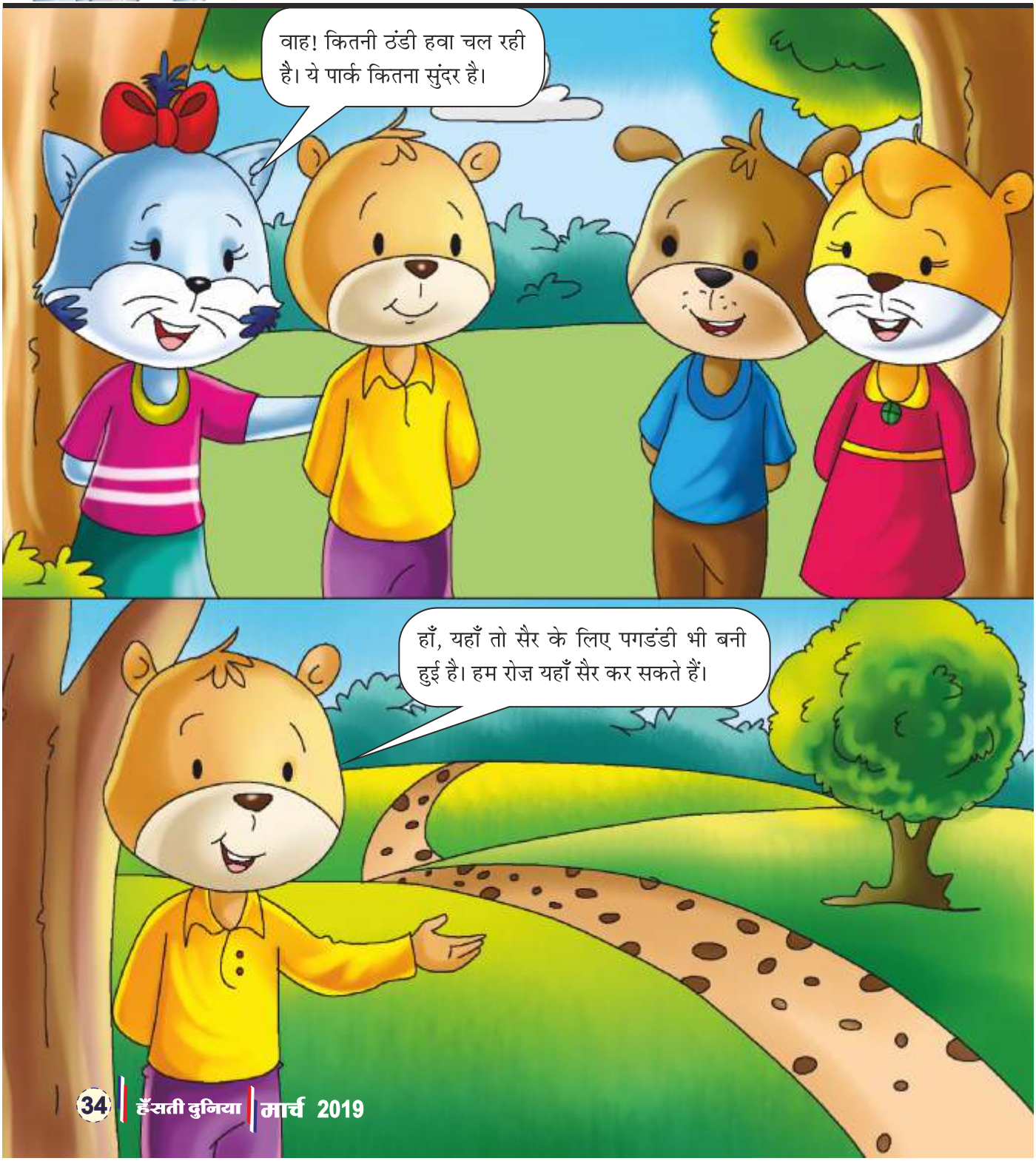

यहाँ तो कितने सुंदर फूल खिले हुए हैं। लाल, पीला गुलाब, गेंदा वाह! क्या खुश्बू आ रही है फूलों से।
चलो, फूल तोड़कर माला बनाते हैं। और कुछ फूलों की पत्तियाँ तोड़कर होली खेलते हैं।
नहीं किट्टी! देखो वहाँ पर बोर्ड लगा है–'फूल तोड़ना मना है।' इसलिए हमें फूल नहीं तोड़ने चाहिए।
फूल तोड़ना मना है।

चिंटू, तुम अपना भाषण बंद करो। हम नहीं तोड़ेंगे तो और कोई तो तोड़ेगा ना! फिर पहले हम ही क्यों न तोड़ लें।
लेकिन किट्टी, हमें कोई अधिकार नहीं है कि पार्क की खूबसूरती को खराब करें। ये हमारी सम्पत्ति नहीं है।
फूल तोड़ना मना है।
लो, अब ये हो गई मेरी सम्पत्ति।
किट्टी, तुम नहीं जानती कि फूलों से हम साबुन इत्र, गुलकंद शरबत आदि कितनी तरह की चीज़ें बनाते हैं।
अगर सब तुम्हारी तरह फूलों को बर्बाद करने लग जाएँगे तो ये सब चीज़ें कहाँ से आएँगी?

कौन है वहाँ पार्क में जो फूल तोड़ रहा है? तुम सबकी अब खैर नहीं।
माली काका, ये सब बच्चे फूल तोड़ रहे थे। मैं तो कब से इन सबको फूलों के महत्व के बारे में बता रही थी।
सॉरी माली अंकल, आगे से कभी फूल नहीं तोड़ेंगे।

– संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

कभी न भूलो

★ सदाचरण व्यक्ति साहसी होता है और सदाचारी व्यक्ति किसी से नहीं डरता। – विलियम शेक्सपीयर

★ परिस्थितियां कैसी भी क्यों न हों, मैं सदा आनन्दमग्न और खुश रहने के लिए प्रतिबद्ध हूँ क्योंकि मैंने अनुभव से यह सीखा है कि हमारी खुशियों और दुखों का बड़ा हिस्सा हमारी सोच पर निर्भर करता है न कि हमारी परिस्थितियों पर। – मार्या वाशिंगटन

★ बिना सद्गुणों के सुन्दरता का कोई मूल्य नहीं।

★ कठिन और मुश्किल शिक्षा से श्रेष्ठ शिष्य निकलते हैं। – चीनी कहावत

★ आत्मविश्वास महत्वपूर्ण है। कभी-कभी जब आपमें विश्वास न हो तो भी आपको आत्मविश्वासी दिखना चाहिए। – वानेसा ह्यूजेंस

★ सत्य के मार्ग पर चलते हुए कोई दो ही गलतियां कर सकता है। एक पूरा रास्ता तय न करना और दूसरा इसकी शुरुआत ही न करना।

★ इन्सान को गलत रास्ते पर ले जाने वाला उसका अपना दिमाग होता है न कि उसके दुश्मन। – गौतम बुद्ध

★ विपत्ति में पड़े हुए लोगों की मदद करना ही महान व्यक्तियों की संपत्ति का सच्चा फल है। संपत्ति पाकर भी मनुष्य अगर विपत्तिग्रस्त लोगों के काम न आया तो वह संपत्ति किस काम की। – कालीदास

★ ताकतवर व्यक्ति की विशेषता है, क्षमा करना।

★ अपने आपको जीवन में ढूंढना है तो लोगों की मदद में खो जाओ। – महात्मा गाँधी

★ हमें कितने लोग पहचानते हैं। यह मायने नहीं रखता बल्कि किस वजह से पहचानते हैं। यह बहुत मायने रखता है। – चाणक्य

★ हर वो कार्य जिसमें आप भय का सामना करते हैं, वह आपकी शक्ति, साहस और आत्मविश्वास को बढ़ाता है। – रूजवेल्ट

★ दोस्ती ऐसा सुनहरा सूत्र है जिसमें दुनिया के दिल पिरोये जा सकते हैं। – जॉन एवलिन

★ नदी में गिरने से कभी भी किसी की मौत नहीं होती, मौत तो तब होती है जब उसे तैरना नहीं आता ठीक उसी तरह परिस्थितियां कभी भी हमारे लिए समस्या नहीं बनती। समस्या तो तब बनती है जब हमें परिस्थितियों से निपटना नहीं आता। – अब्दुल कलाम

★ जहाँ नियमों के विपरीत आचरण होता है, वहीं क्रूरता का आरम्भ होता है। – विलियम पिट

★ मूर्खों की सफलताओं की अपेक्षा बुद्धिमानों की गलतियां अधिक मार्गदर्शक होती हैं। – विलियम ब्लेक

★ जिन्दगी की लड़ाई में हमेशा वही व्यक्ति नहीं जीत हासिल करता जो बलवान या तेज है बल्कि जीतता वह है जो सोचता है कि वह जीत सकता है। – ब्रूसली

★ जिन्दगी तो अपने दम पर जी जाती है, दूसरों के कंधों पर तो सिर्फ जनाजे उठाए जाते हैं। – भगत सिंह

इतिहास कथा : शिवचरण चौहान

देश का बेटा

महाराज कृष्णदेव राय विजयनगर साम्राज्य के सम्राट थे। वह वीर और न्यायप्रिय शासक थे। उनकी बहादुरी के किस्से उनके जीते जी कहे सुने जाने लगे थे। पड़ोसी राज्य के राजा चन्द्रशेखर कृष्णदेव राय के मित्र थे।

एक बार तंजौर के शासक राजा वीरशेखर ने चन्द्रशेखर पर हमला कर दिया। वीरशेखर, चोलवंश का था और चोलवंश के राजा विजयनगर की बढ़ती कीर्ति के कारण कृष्णदेव राय के दुश्मन बने हुए थे। चन्द्रशेखर पर हमले की खबर पाकर महाराज कृष्णदेव राय ने अपने सेनापति नागमाराव नायक को बुलवाया और चन्द्रशेखर की मदद करने भेजा। नागमाराव नायक ने वीरशेखर की सेनाओं को खदेड़ दिया किन्तु उसका मन चन्द्रशेखर का सम्पन्न राज्य देखकर बिगड़ गया। उसने चन्द्रशेखर को बन्दीगृह में डलवा दिया और स्वयं राजा बन बैठा किन्तु चन्द्रशेखर का बेटा अनन्तशेखर भाग खड़ा हुआ। उसने महाराज कृष्णदेव राय के दरबार में उपस्थित होकर नागमाराव नायक की करतूत बयान की। अपने सेनापति की गद्दारी सुनकर महाराज कृष्णदेव राय का खून खौल उठा। उन्होंने राज्यभर में मुनादी करवा दी कि जो भी व्यक्ति नागमाराव नायक को जिन्दा या मुर्दा पकड़कर लाएगा उसे ईनाम दिया जाएगा।

मुनादी करवाए एक सप्ताह हो गया पर किसी ने महाराज के सामने आकर बागी सेनापति नागमा को गिरफ्तार करने की चुनौती स्वीकार नहीं की। आखिर महाराज कृष्णदेव राय ने एक दिन भरे दरबार में घोषणा की वह स्वयं नागमा को गिरफ्तार करने जाएंगे। तभी एक युवक दरबार में आया उसने कड़ककर कहा– महाराज! मैं जाऊँगा सेनापति को गिरफ्तार करने और जिन्दा या मुर्दा जिस रूप में सम्भव हुआ, मैं उसे आपके चरणों में डाल दूंगा।

महाराज आश्चर्य में आ गये क्योंकि वह युवक और कोई नहीं सेनापति नागमाराव नायक का बेटा विश्वनाथराव नायक था। महाराज बोले– सेनापति के पुत्र, सोच लो, क्या तुम जो कह रहे हो कर पाओगे?

–क्यों नहीं महाराज!– युवक विश्वनाथ राव नायक दृढ़ता से बोला– मैं सेनापति नागमाराव का बेटा होने से पहले इस देश का बेटा हूँ। मैंने इस मिट्टी का अन्न व नमक खाया है। इसलिए मातृभूमि की आन के लिए मैं अपने को कुर्बान करना भी जानता हूँ।

महाराज कृष्णदेव राय मान गये। उन्होंने विश्वनाथ को एक बड़ी सेना देकर नागमाराव को गिरफ्तार करने भेजा।

नागमाराव नायक ने जब देखा कि उसका ही बेटा भारी फौज लेकर उसे गिरफ्तार करने आया है तो उसने एक खास दूत भेजकर अपने बेटे को कहलवाया कि उसने जो कुछ भी किया है, तुम्हारे लिए किया है। मेरे बाद यहाँ की गद्दी के उत्तराधिकारी तुम ही बनोगे।

इस पर विश्वनाथ ने अपने पिता को जवाब भिजवाया।– पिताश्री, मैं पहले विजयनगर का बेटा हूँ बाद में आपका। आपने अपने स्वामी और देश के साथ गद्दारी करके अब पिता कहलाने का हक भी समाप्त कर दिया है। आपकी भलाई इसी में है कि आप तुरन्त आत्मसमर्पण कर दें।

नागमाराव नायक ने कई चालें चलीं कि उसका बेटा उसके जाल में फंस जाए पर वह असफल रहा। अन्त में बाप-बेटे की सेनाओं में घनघोर युद्ध हुआ। बाप-बेटे आमने-सामने तलवारें खींचकर आ गये। नागमाराव असाधारण वीर था, कभी किसी से हारा नहीं था किन्तु आज उसका ही बेटा, उस पर भारी पड़ रहा था। दिनभर के युद्ध के बाद नागमाराव पराजित हुआ। विश्वनाथ राव अपने बाप की मुश्कें बांध उसे विजयनगर लाया और महाराज कृष्णदेव राय के सामने खड़ा कर दिया।

महाराज कृष्णदेव राय, विश्वनाथ राव से बहुत प्रसन्न हुए और बोले– विश्वनाथ, तूने आज वह कर दिखाया जिसकी मिसाल इतिहास में बहुत कम मिलती है। तुमने विजयनगर के नमक का फर्ज अदा कर दिया अब तुम चाहे तो विजयनगर का राज्य भी मांग लो मैं दे डालूंगा।

विश्वनाथ नायक महाराज कृष्णदेव के चरणों में गिर पड़ा।– महाराज, मुझे विजयनगर का साम्राज्य नहीं चाहिए। कर सकें तो मेरे पिता को माफ कर दें। ये भटक गये थे।

महाराज कृष्णदेव राय हैरान रह गये।– अरे अभी तक अपने बाप के खून का प्यासा बेटा उसकी जिन्दगी मांग रहा है।– थोड़ा सोचकर महाराज बोले– विश्वनाथ, तुम्हारी वजह से मैं तुम्हारे बाप को सारे अपराधों से मुक्त कर आजाद करता हूँ और तुम्हें राज्य का सेनापति बनाता हूँ।

विश्वनाथ नायक ने अपने पिता के बन्धन अपने हाथों से खोले तो बाप की आँखों में आंसुओं की धारा बह चली। नागमाराव नायक ने बेटे को गले लगा लिया और बोला– बाप अपने बेटे को गलत रास्ते पर जाने से रोकता है पर यहाँ तो उलटा हुआ तूने अपने बाप को गलत रास्ते जाने पर उसे खींचकर कुकर्म से बचा लिया। मैं धन्य हो गया।

दरबार, विश्वनाथ और नागमाराव नायक की जयकारों से गूंज उठा।

आलेख : दिनेश दर्पण

पौराणिक कहानियों में होली

होली का पर्व हम प्रतिवर्ष मनाते हैं, और होलिका को फाल्गुन माह में जलाते चले आ रहे हैं। इससे जुड़ी बहुचर्चित भक्त प्रहलाद की कथा तो हम सब जानते ही हैं, पर इस महापर्व से और भी कई पौराणिक कथाएं जुड़ी हुई हैं। आओ हम इस बारे में और भी जानकारी प्राप्त करें–

पौराणिक कहानियों में सबसे अधिक प्रसिद्ध कहानी भक्त प्रहलाद की है जो हमें नृसिंह पुराण में पढ़ने को मिलती है। हिरण्यकश्यपु नाम का एक दैत्य (राक्षस) था। उसने तपस्या करके ब्रह्माजी से वरदान प्राप्त कर लिया था। उसके बल पर उसने सारी दुनिया को जीतकर देवताओं और ऋषि–मुनियों को सताना शुरू कर दिया। दैत्यराज हिरण्यकश्यपु का पुत्र प्रहलाद भगवान विष्णु का परम भक्त था और राम–नाम का भजन कीर्तन किया करता था।

दैत्यराज हिरण्यकश्यपु ने अपने पुत्र पर अनेक अत्याचार किये ताकि वह भक्ति के मार्ग से हट जाए, लेकिन ऐसा हो नहीं सका, और भक्त प्रहलाद भक्ति के मार्ग से पीछे नहीं हटा। वह निरंतर हरि स्मरण करता रहता था।

इसी कहानी के सिलसिले में पद्मपुराण में चिता जलाकर और नारद पुराण में प्रहलाद की बुआ और हिरण्यकश्यपु की बहन होलिका द्वारा प्रहलाद को गोदी में लेकर आग में बैठने का वर्णन है। होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि यदि वह चाहे तो रोज अग्नि स्नान करे तब भी वह नहीं जलेगी, लेकिन अपने भाई हिरण्यकश्यपु की आज्ञा से जब वह विशाल

जलती हुई चिता में प्रहलाद को गोद में लेकर बैठी तो जलकर भस्म हो गई और प्रहलाद सकुशल चिता से बाहर आ गया। यह देखकर हिरण्यकश्यपु आगबबूला हो गया, और उसने अपने पुत्र प्रहलाद को मारने के लिए जैसे ही तलवार उठाई तो उसी समय भगवान विष्णु ने नृसिंह अवतार के रूप में प्रकट होकर अपने तीखे–तीखे नाखूनों से हिरण्यकश्यपु का पेट फाड़कर उसका वध कर दिया। तभी से दुष्ट दैत्य हिरण्यकश्यपु और होलिका के नष्ट होने के रूप में होलिका दहन प्रतिवर्ष सर्वत्र मनाया जाता है।

होलिका दहन से संबंधित एक कहानी भागवत पुराण में है। द्वापर युग में मथुरा नगरी में एक कंस नाम का राजा था। उसने अपने भान्जे बालक कृष्ण को जान से मारने के लिए पूतना नाम की राक्षसी को भेजा। पूतना अपनी माया से अपना वेश बदलकर गोकुल में नंदराज के भवन में गई। वह इधर–उधर की बातें करते हुए माता यशोदा के पास जा पहुँची और बातें करते–करते उसने यशोदा से बालक कृष्ण को अपनी गोद में ले लिया और खिलाने लगी। फिर सबकी नजरों से बचाकर उसे एक तरफ ले गई और अपने जहर–बुझे स्तन से दूध पिलाने लगी। बालक कृष्ण उसके मन की बात को जान गये। फिर उन्होंने पूतना के स्तन से सारा दूध पी लेने के बाद भी जब उसका स्तन नहीं छोड़ा तो उसे भयंकर पीड़ा होने लगी। वह अपने असली रूप में आ गई और कुछ देर तड़पने के बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मौत पर गोकुलवासियों को बहुत खुशी हुई। उन लोगों ने रात में ही पूतना का शव जला दिया और इसी खुशी की स्मृति स्वरूप प्रतिवर्ष फाल्गुन माह की शुक्ल पूर्णिमा के दिन होली जलाने लगे।

होली जलाने से संबंधित एक कहानी और भी हमें पुराण में पढ़ने को मिलती है। वैदिक काल में एक होलिका नाम की राक्षसी थी। वह लोगों को बहुत सताती थी। उसके अत्याचार दिन पर दिन बढ़ते ही जा रहे थे। लोग हैरान परेशान थे। जब लोगों की सहनशक्ति समाप्त हो गई तो उसे लोगों ने घेरकर पकड़ लिया और रात में ही उसे जला दिया गया। उस दिन भी फाल्गुन मास की शुक्ल पूर्णिमा थी। इस तरह होलिकोत्सव का पर्व कई कहानियों से जुड़ा हुआ है।

कविता : राजकुमार जैन 'राजन'

नाचो गाओ भैया रे

होली आई होली आई,
नाचो गाओ भैया रे
इधर भी टोली, उधर भी टोली,
रंग उड़ाओ भैया रे।

भूल गए हैं भेद-भाव सब,
रंगों में डूबे चहक रहे हैं।
छोटे-बड़े धनी और निर्धन,
होली के रंग में महक रहे हैं।

भूल गए हैं जात-पात सब,
सब ही रंगे एक रंग में।
राम, रहीम, पीटर सब देखो
ताल मिलाते एक ही संग में।

पिचकारी के रंगों में भैया,
प्यार अनूठा घोलो रे।
कदम मिलाकर चलो रे भैया,
मीठा-मीठा बोलो रे।

बाल कविता : डॉ. हरीश निगम

होली में भीगे मोती

दिन ढोलक की ताल के,
बादल उड़े गुलाल के।

पिचकारी की धार चली,
पल-छिन कटे मलाल के।
लिपे-पुते चेहरे लगते,
बंदर जैसे डाल के।

रंगों में खो गये सभी,
मुखड़े पिछले साल के।
होली में भीगे मोती,
हम हैं एक रुमाल के।

पढ़ो और हँसो

नीतू : हमारे गाँव में सभी व्यक्ति तंदुरुस्त हैं, कोई भी कमजोर नहीं है।

सोनिया : फिर वह जो सामने से मरियल-सा आदमी आ रहा है वह कौन है?

नीतू : वह इस गाँव का वैद्य है।

रामू के दोनों कान जल गये। वह डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर ने पूछा– यह कैसे हुआ?

रामू : मैं कपड़े प्रेस कर रहा था। तभी फोन बजा, मैंने जल्दी में गलती से फोन की जगह प्रेस कान पर लगा ली।

डॉक्टर : लेकिन यह दूसरा कान कैसे जला?

रामू : बात यह है कि थोड़ी देर बाद फिर फोन आ गया था।

भिखारी : बहन जी, भूखा हूँ थोड़ा खाना दे दो।

गृहिणी : खाना अभी पका नहीं है।

भिखारी : कोई बात नहीं। आप मेरा नंबर लिख लो। जब खाना तैयार हो जाएगा तो 'मिस-कॉल- कर देना।

– राधा नाचीज (नजफगढ़, दिल्ली)

रामू : सर, मेरे घर में टीवी को छोड़कर बाकी सबकुछ चोरी हो गया है।

पुलिस : चोर ने सिर्फ टीवी किसलिए छोड़ा होगा?

रामू : मुझे क्या पता सर! मैं उस समय टीवी पर फिल्म देख रहा था।

गैरेज के मालिक को जोर-जोर से खर्राटे लेते देख उसके स्टाफ को सोने में दिक्कत हो रही थी। जिस कारण उन्होंने मालिक के नाक में ही 'मोबिल ऑयल' डाल दिया। हड़बड़ाकर मालिक जागा तो स्टाफ पर गुस्सा होने लगा।

बेचारा स्टाफ डरते-डरते बोला– आप ही तो कहते हैं कि किसी भी चीज में से आवाज निकले तो उसमें 'मोबिल ऑयल' डाल देना चाहिए।

डॉक्टर : इस दवा को एक हफ्ते में खत्म करो और बाद में आकर दिखाओ।

मरीज : ठीक है डॉक्टर साहब।

(एक हफ्ते बाद)

डॉक्टर : दवा खत्म हुई क्या?

मरीज : नहीं डॉक्टर साहब।

डॉक्टर : क्यों नहीं?

मरीज : उस पर लिखा था कि बोतल को हमेशा बन्द रखें।

गृह-विज्ञान की एक छात्रा पाक-कला की परीक्षा देकर लौटी तो उसकी माँ ने पूछा– तुमने वहाँ जो चटनी बनाई थी, वह तुम्हारी टीचर अकेली ही चट कर गई या तुम्हें भी खाने को दी।

छात्रा बोली– खाने को दी? अरे माँ, टीचर ने चटनी चखी, फिर सारी चटनी मुझे जबरदस्ती खिलाई। -प्रवीन सिंह 'हसोड़' (गुरुग्राम)

एक बच्चा स्कूल से आया तो उसकी माँ उसका खरोचों से भरा चेहरा देखकर गुस्से से बोली– तुमने फिर लड़ाई कर ली किसी बच्चे से? मैंने तुम्हें कितनी बार समझाया है कि जब कभी भी लड़ाई-झगड़े की नौबत आती दिखाई दे, तुम लड़ने से पहले बीस तक गिनती गिना करो।

बच्चा : (रुआंसा होकर) मालूम है मम्मी, लेकिन दूसरे लड़के की मम्मी ने उसे सिर्फ दस तक ही गिनती गिनने के लिए कहा था।

– श्याम बिल्दानी (बड़नेरा)

पुलिस चौकी पर एक फोन आया।– इंस्पेक्टर साहब, किसी ने मेरी मोटर साइकिल के सारे पुर्जे चुरा लिए हैं। ब्रेक, क्लच, एक्सीलेटर, हैंडिल सभी गायब हैं।

इंस्पेक्टर ने सांत्वना दी।– मैं अभी आकर जांच करता हूँ।

इंस्पेक्टर जाने को तैयार हुआ ही था कि फोन दोबारा बज उठा। वही सज्जन बोल रहे थे।– क्षमा करें इंस्पेक्टर साहब! यहाँ सब ठीक है। बात यह हुई कि मैं जल्दी में सीट पर पीछे की तरफ मुँह करके बैठ गया था।

जज : (अपराधी से) तुमने उसका हाथ क्यों जलाया?

अपराधी : श्रीमान जी, मैं तो इससे नौकरी मांगने गया था। इसने कहा कि मैं इसकी मुट्ठी गर्म करूँ। इसलिए मैंने इसके हाथ पर जलता हुआ कोयला लाकर रख दिया।

एक जनसभा में एक नेता भाषण कर रहे थे और लोग बहुत बोरियत महसूस कर रहे थे। पर नेता बैठने का नाम ही नहीं ले रहे थे। लोग उकताकर तालियां बजाते तो वे समझते की तारीफ हो रही है। आखिरकार एक व्यक्ति से रहा न गया। वह उठा और नेता के कान में कुछ कहा। नेता फौरन भाषण खत्म करके कुर्सी पर बैठ गया।

लोगों ने उस व्यक्ति से पूछा– आपने उन्हें क्या कहा जो वह बैठ गया।

इस पर वह व्यक्ति बोला– मैंने उनसे कहा कि आपका पायजामा फटा हुआ है। उसे देखकर लोग हँस रहे हैं और तालियां बजा रहे हैं।

एक व्यक्ति हलवाई की दुकान पर गया। दूध खरीदा और पी गया। पीने के बाद वह व्यक्ति बोला– दूध में चीनी नहीं थी; चीनी दो। व्यक्ति चीनी फांककर भूमि पर लोटने लगा तो दुकानदार ने सोचा– 'कहीं दूध में गड़बड़ी तो नहीं। कहीं पकड़े न जायें।' यह सोचकर उसने सारा दूध नाली में उड़ेल दिया। थोड़ी देर बाद वह व्यक्ति उठकर बोला– दूध के कितने पैसे दूँ?

दुकानदार : पैसे बाद में पहले यह बताओ कि तुम जमीन पर क्यों लोट रहे थे?

व्यक्ति : मैं तो पेट के दूध में चीनी मिला रहा था।

दुकानदार : खूब चीनी मिलाई, मेरा तो सारा दूध खराब हो गया।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

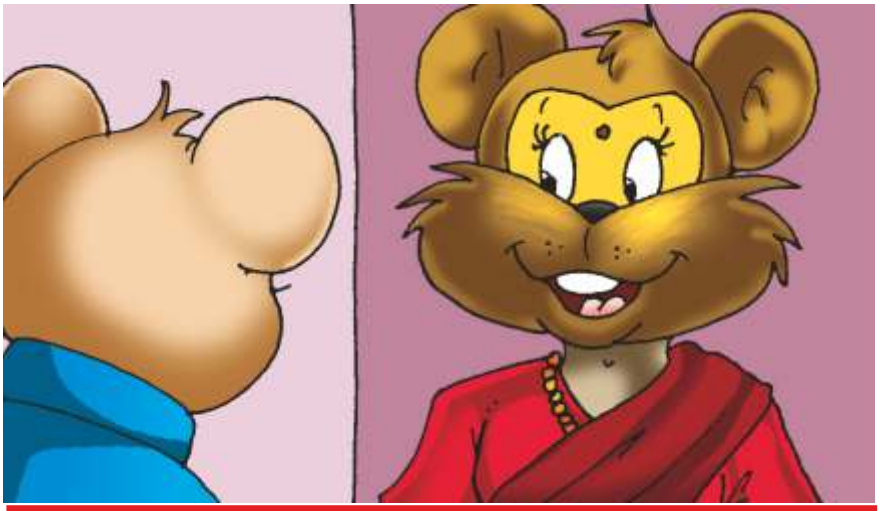

बाल कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

माँ की नसीहत

एक थी काले मुँह की बंदरिया करीना। उसका एक बेटा था बॉबी। जिसे वह बहुत प्यार करती थी। अत्यधिक प्यार की वजह से बॉबी नटखट, उच्छृंखल और जिद्दी बन गया था। करीना उसे प्राय: समझाते हुए नसीहत देती– पहाड़ीवाले तालाब के पानी में कभी मत नहाना। उस स्थान पर कभी मत ठहरना जहाँ इन्सानों की भीड़भाड़ हो और आखिरी बात; आकस्मिक संकट से निबटने के लिए इष्टदेव का स्मरण मात्र पर्याप्त नहीं है बल्कि यथाशक्ति प्रयास भी आवश्यक है।

एक दिन करीना को गहरी नींद लगी तो फायदा उठाते हुए बॉबी अपने डेरे से बाहर निकल आया। उसके चंचल मन में मम्मी की दी हुई नसीहतें कुलबुला रही थीं जिन्हें आजमाने के लिए वह व्यग्र हो रहा था। आखिर पहाड़ीवाले तालाब में नहाने से मम्मी क्यों मना करती है? भीड़भाड़ वाली जगह जाने में क्या परेशानी है?

पलक झपकते ही कूदता-फांदता बॉबी पहाड़ीवाले तालाब के पास पहुँच गया। मटमैले पानी में जैसे ही उसने छलांग मारी... यह क्या, उसके पैरों को जैसे किसी ने जकड़ लिया। उसने पैर खींचने की भरपूर कोशिश की तो और धंसने लगा।

दरअसल, वहाँ दलदल था जिसमें वह निरन्तर धंसता जा रहा था। हताश होकर वह जोर-जोर से क्रंदन करने लगा तो एक विशालकाय बाज पक्षी ने लपककर उसे बाहर निकाल लिया।

–धन्यवाद बाज अंकल! आपने मेरी जान बचाई।– कृतज्ञ स्वर में बॉबी बोला।

–धन्यवाद देने की जरूरत नहीं है क्योंकि मैंने तुम्हें इसलिए बचाया है कि अपना दोपहर का भोजन बना सकूं।– बाज ने अपनी मंशा बताई तो बॉबी के हाथ-पैर फूलने लगे। 'आसमान से गिरा खजूर पर अटका।' वाली कहावत चरितार्थ होने लगी। तभी एक विशाल अजगर को अपनी ओर आते देख बाज पक्षी का ध्यान भंग हुआ तो मौके का फायदा उठाते हुए बॉबी बंदर जान बचाकर भाग निकला। मम्मी की पहली नसीहत सही निकली।

अगले दिन जैसे ही करीना बंदरिया ने खर्राटे भरने शुरू किये। बॉबी सज-धजकर, सिर पर लाल टोपी लगाए घर से बाहर निकल गया और पहुँच गया वहाँ जहाँ बहुत सारे लोग पिकनिक मनाने के लिए इकट्ठे हुए थे। बॉबी बंदर के सिर पर लगी रंगीन टोपी पर एक मासूम बच्चे का दिल आ गया और वह उसे पाने के लिए मचलने लगा। समझाने पर भी जब बालक टस से मस नहीं हुआ तो आखिरकार बच्चे के पिता ने अपने साथियों के कान में कुछ फुसफुसाया। फौरन तीन-चार आदमी सिर पर टोपी लगाए सामने के पेड़ पर चढ़ गये और अपने सिर से टोपी निकालकर नीचे फेंकने लगे। बस नकलची

बॉबी ने भी अपने सिर से टोपी उतारकर नीचे फेंक दी। अपनी टोपी खोने का उसे बहुत अफसोस हुआ पर 'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।' इस तरह मम्मी की दूसरी नसीहत पर भी मोहर लग गई।

एक-दो दिन बाद एक सुबह बॉबी फिर घर से चंपत होकर तोंदू तेंदुए की खोह के निकट पहुँच गया। बॉबी को देखते ही लार टपकाते हुए और खुश होते हुए तोदू तेंदुए ने कहा– आ जा बच्चे, मैं नाश्ते का इन्तजार कर रहा था। सुबह-सुबह मुझे नरम मांस का नाश्ता बहुत भाता है।

बॉबी सिर से पैर तक कांप गया। अब फुर्तीले तेंदुए से जान बचाना नामुमकिन था। भय के कारण उसके हाथ-पैर फूलने लगे जैसे उनमें ताकत ही न रही हो। तभी उसे मम्मी की नसीहत याद आई और वह अपने इष्टदेव हनुमान जी का स्मरण करने लगा लेकिन इतना पर्याप्त नहीं था। हिम्मत जुटाकर वह पास के पेड़ की डाल पर चढ़ने लगा, तेंदुए ने भी जोरदार छलांग लगाई लेकिन नाजुक डाली उसके बोझ को सहन नहीं कर सकी और डाली टूटने के बाद तेंदुआ भी भरभराकर जमीन पर आ गिरा। तेंदुआ जब तक सम्भलता बॉबी बंदर पूरी शक्ति से इधर-उधर उछलता कूदता 'नौ दो ग्यारह हो गया।'

घर पर पहुँचा तो करीना बंदरिया बेचैनीपूर्वक उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। बदहवास बॉबी ने कृतज्ञ भाव से मम्मी की ओर देखा और छाती से चिपक गया। मम्मी की नसीहत से आज उसकी जान बची थी।

जनवरी अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 एकता प्रसाद 11 वर्ष
फ्लैट नं. टी-2, प्रिया अपार्टमेंट,
तलावड़ी सर्कल, अहमदाबाद (गुजरात)

2 गुरुप्रीति, गुरुशरण 11, 15 वर्ष
शिवराम पार्क,
नांगलोई (दिल्ली)

3 इसिका कुमारी 9 वर्ष
गाँव : बेला, पोस्ट : गोविन्दपुर,
जिला : नवादा (बिहार)

4 लवलीन आहूजा 14 वर्ष
1409/3, फेस - 11,
मोहाली (पंजाब)

5 समीक्षा मेहरा, अद्वितीय मेहरा 12, 8 वर्ष
1185/13, सुन्दर नगर,
पोस्ट : एच.एम.टी. कॉलोनी,
अजमेर (राजस्थान)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

निहारिका आहूजा (मोहाली), नवदिशा त्यागी (लोकनायकपुरम, दिल्ली), यवनिका ठाकुर (भरमोटी कलां), हर्षिता रामा (रसुह, कांगड़ा), प्रतिभा यादव (कृष्णा कॉलोनी, गुड़गाँव), रितु आर्या (मुझोली, अल्मोड़ा), रोनित साधवानी (उल्हास नगर), कशिश सोनी (कृष्ण नगर, पानीपत), टोशान श्रीवास्तव (फरीदाबाद), जयाना सेठ (बटाला रोड, अमृतसर), मालविका (हरचकियां, कांगड़ा), पुण्या ठुकराल (छत्तरपुर, दिल्ली), प्रथम हंस (हरदेव नगर, दिल्ली), अम्बर लाम्बा (वसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली), आयान राव (वल्लुवाड़ा, रेवाड़ी), खुशी (नकोदर, जालंधर), सुहानी (स्वर्ग आश्रम कालोनी, दिल्ली), सिद्धांत पाण्डेय (थाना रोड, जगतदल), सिमरजीत बत्रा (सुभाष पार्क, दिल्ली), ओम सोमजनी, आयशा, हार्दिक, सुमित रूपाणी, जानवी मुलचंदानी, कृष्णा भाषाणी, दक्ष वाधवानी, भूमि लालवानी (गोधरा)।

मार्च अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 मार्च तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) मई अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

हमारा परिवार हँसती दुनिया का बरसों पुराना पाठक है। हँसती दुनिया का जनवरी अंक मिला। 'सबसे पहले' में आपने सभी के भले की कामना करते हुए निरन्तर कार्यशील रहने की प्रेरणा दी है जो अच्छी बात है।

कहानी 'सहृदय चिकित्सक' मानव सेवा का जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत करती है।

आलेख 'सफरनामा राष्ट्रीय ध्वज का' से राष्ट्रीय ध्वज के बारे में सम्पूर्ण जानकारी मिलती है।

– श्याम बिल्दानी (बड़नेरा)

बचपन से ही हँसती दुनिया का पाठक हूँ। ये पत्रिका बच्चों एवं युवाओं के सम्पूर्ण विकास का माध्यम है। जहाँ कहानियों एवं कविताओं के सहारे चरित्र विकास एवं भक्ति की प्रेरणा मिलती है। हर अंक में अवतार बाणी का शब्द पढ़कर मन प्रसन्न हो जाता है। इससे बच्चे भविष्य में भक्ति के मार्ग पर सुदृढ़ होंगे।

–योगेश लूथरा (गुरुग्राम)

मैं हँसती दुनिया पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। अच्छी इसलिए लगती है कि इस पत्रिका के माध्यम से बच्चों में आप अच्छे संस्कार का निर्वाह कर रहे हैं और इन्हें अच्छा ज्ञान दे रहे हैं। **– जगदीश नैलवाल (ब्रह्मपुरी, दिल्ली)**

हँसती दुनिया का नवम्बर अंक प्राप्त हुआ। 'सबसे पहले' में आपने प्रकाश का महत्व बताया है। सच में अगर हमारे मन में ज्ञान का प्रकाश होगा तो हम औरों को भी प्रकाशित कर सकते हैं।

इस अंक में दीवाली से जुड़े लेख व कविताएं बहुत अच्छी लगे। 'शिवाजी का साहस' कहानी से हमें बहुत प्रेरणा मिलती है।

मेरी हार्दिक कामना है कि यह पत्रिका और भी आगे बढ़ती जाये। **– अमिता मोहन (बठिण्डा)**

Form - IV
(See Rule - 8)

1. Place of Publication :
   Sant Nirankari Satsang Bhawan,
   Sant Nirankari Colony,
   Delhi-110009
2. Periodicity of Publication :
   Monthly
3. Printer's Name :
   C. L. Gulati
   (whether citizen of India)
   Yes, Indian
   Address :
   Sant Nirankari Satsang Bhawan
   Sant Nirankari Colony
   Delhi-110009
4. Publisher's Name :
   C. L. Gulati
   (whether citizen of India)
   Yes, Indian
   Address :
   Sant Nirankari Satsang Bhawan
   Sant Nirankari Colony
   Delhi-110009
5. Editor's Name :
   Vimlesh Ahuja
   (whether citizen of India)
   Yes, Indian
   Address :
   H.No. 1/43, Sant Nirankari Colony,
   Delhi - 110009
6. Name & Address of individuals, who own the newspaper and partners or share holders holding more than one percent of the total capital.
   Sant Nirankari Mandal,
   Sant Nirankari Colony,
   Delhi - 110009

I, C. L. Gulati, do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date : 1-3-2019 — C. L. Gulati
Publisher

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
: Licence No. U (DN)-23/2018-20
: Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
Ph. 011—47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 22-24102047

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)